BHAJAN MALA

BY

ISHWARA NANAD GIRI

आमुख

कायिक, वाचिक, मानसिक भेद से कर्म त्रिविध है। उपासना में द्रव्यसामग्री से देवपूजन करना कायिक, मंत्र का जप वाचिक एवं इष्टध्यान मानसिक माने जाते हैं। इन तीनों रूपों को अपनाने से ही कोई भी अनुष्ठान पूर्ण फलप्रद हो सकता है। अतः इन तीनों साधनों का ज्ञान साधक के लिए वांछनीय है।

मंत्र जप व ध्यान के विधान प्रायः गुरुगम्य ही होते हैं। परन्तु पूजा पद्धति में ऐसा संकोच नहीं। यह सर्वोपयोगी सर्वसाधारण के लिए सुविज्ञेय एवं दैनिक सदाचार के एक अनिवार्य अंग है। प्रतिदिन मंत्र जपके पूर्वमें या अंतिम में देवपूजन का शास्त्र्य विधान है। यथा—

एकदा वा भवेत् पूजा न जपेत् पूजनं विना।
जपान्ते वा भवेत् पूजा पूजान्ते वा जपन् मनुम्॥

इससे सिद्ध है कि देवपूजन विधि को जानकर प्रतिदिन नियमानुसार उसे संपन्न करना अध्यात्म जीवन के अन्य साधनों का मूल है।

विगत १५ वर्षों में सामूहिक पूजन-अर्चन आदि का आयोजन करने के अनेक अवसर प्राप्त हुए। उनमें जिस पद्धति का अवलम्बन किया गया था उससे साधकों को बहुत संतोष व प्रेरणा प्राप्त हुई। उन्हीं के आग्रह से इस संक्षिप्त पूजा-क्रम विशेष का प्रकाशन यहाँ हो रहा है।

शिव और शिवा दोनों की पूजा विधि "शिवार्चा" में संगृहित है। संक्षिप्त होते हुए भी अभिषेक, अर्चना, गणपूजा आदि सभी पूजा-अंगों का इसमें समावेश है। आशा है कि इससे उपासक जगत को शिवभक्ति अंकुरित होने में एवं शिव कृपा रूप अमरफल प्राप्ति में सहायता मिलेगी।

इस पुस्तिका के पाण्डुलिपशोध आदि प्रकाशन कार्य का भार श्रीमान् लोकेशानन्दजी, वेदान्ताचार्य के ऊपर ही रहा। इस स्नेहमय श्रम को स्वीकार करके श्री उमामहेश्वर उन्हें शिवज्ञान प्रदान करें।

गुरुपूर्णिमा
स० २०२८

ॐ सर्वं शिवामिति
ईश्वरानन्द गिरि

विषयानुक्रम

प्रातः स्मरण-स्तोत्रम्

प्रातः स्मरामि भवभीतिहरं सुरेशं,

गंगाधरं वृषभवाहनमम्बिकेशम् ।

खट्वाङ्गशूलवरदाभयहस्तमीशं,

संसाररोगहरमौषधमद्वितीयम् ॥ १ ॥

प्रातर्नमामि गिरिशं गिरिजार्द्ध देहं,

सर्गस्थिति प्रलय कारणमादिदेवम् ।

विश्वेश्वरं विजितविश्वमनोऽभिरामं,

संसाररोगहर............॥ २ ॥

प्रातर्भजामि शिवमेकमनन्तमाद्यं,

वेदान्त वेद्यमनघं पुरुषं महान्तम् ।

नामादिभेदरहितं षड्भावशून्यं,

संसाररोगहर............॥ ३ ॥

प्रातः समुत्थाय शिवं विचिन्त्य,

श्लोकत्रयं येऽनुदिनं पठन्ति ।

ते दुःखजातं बहुजन्मसञ्चितं,

हित्वा पदं यान्ति तदेव शम्भोः ॥ ४ ॥

शिवार्चा

—संक्षिप्त पद्धति—

('पूर्वाह्न एव कुर्वीत देवतानां च पूजनम्') इस मानव वचनानुसार-देवपूजन प्रातःकाल में स्नानानन्तर एवं भोजन के पूर्व होना चाहिए। सदाचारी शुचि व्यक्ति ही देवपूजन का अधिकारी है। अतः पूजन के पहले प्रातःकृत्यों का शास्त्रीय विधान संक्षेप में दिया जाता है :—

प्रातरुत्थान—

रात्रे पश्चिमयामाय मुहूर्तो यस्तृतीयकः।
स ब्राह्म इति विज्ञेयो विहितः स प्रबोधने ॥ (विष्णुपुराण)

रात्रि के अन्तिमयाम के तृतीय मुहूर्त को 'ब्राह्ममुहूर्त' कहा। उसी में शयन त्याग कर जागने का विधान है। (उस समय की निद्रा से पुण्य का क्षय होता है।)

ब्राह्मे मुहूर्ते बुद्धयेत धर्मार्थावनुचिन्तयेत्।
काय क्लेशांश्च तन्मूलान् वेद तत्त्वार्थमेव च ॥ (मनु)

ब्राह्ममुहूर्त में जागते ही शय्या पर बैठ कर, धर्म एवं अर्थ का विचार करें। इनके द्वारा दैनिक जीवन निर्वाह करने में शरीर-इन्द्रिय-मन को प्राप्त क्लेश एवं उस क्लेश के मूलभूत अविद्या-काम-कर्म रूप संसार स्वरूप का भी चिन्तन करें, जिससे दैनिक प्रवृत्ति राग से प्रेरित न होकर कर्तव्य मात्र ही रहे। साथ-साथ संसार का सार एवं वेदों में प्रतिपादित तत्त्वरूप परमेश्वर का भी ध्यान करें। क्यों कि समस्त कर्म-उपासना-ज्ञान की साधना में एकमात्र प्राप्तव्य जीवन-लक्ष्य परमेश्वर ही है। अतः परमेश्वर से निम्नांकित

श्लोक के द्वारा अनुज्ञा की प्रार्थना करके ही दैनिक जीवन को प्रारम्भ करना चाहिये :—

त्रैलोक्य चैतन्यमयादिदेव श्रीनाथ शम्भो भवदाज्ञयैव।
प्रातः समुत्थाय तव प्रियार्थं संसारयात्रामनुवर्तयिष्ये॥

कर दर्शन—

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते करदर्शनम्॥

यह कहकर अपनी हथेलियों का दर्शन करें, क्यों कि हाथ के अग्र, मध्य एवं मूल भाग में क्रमशः लक्ष्मी, सरस्वती और ब्रह्मा का वास है।

भूमि-स्पर्श—

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादस्पर्शं क्षमस्व मे॥

यह कहकर शय्या से उठते समय नीचे पैर रखने के पूर्व पृथ्वी की प्रार्थना करें। तदनन्तर हाथ मुँह धोकर तीन कुल्ला करके भगवन्नाम स्मरण पूर्वक शौचादि क्रिया सम्पन्न करनी चाहिये।

शौच—

शौचे यत्नः सदाकार्यः शौचमूलो यतोद्विजः।
शौचाचारविहीनस्य समस्ता निष्फलाः क्रियाः॥ (दक्ष)

अध्यात्म जीवन का मूल ही शौचाचार है। अतः उसका शास्त्रीय विधान यत्नपूर्वक पालनीय है। शौचहीन व्यक्ति की सारी क्रियायें शास्त्र दृष्टि से निरर्थक हैं। प्रातरुत्थान के बाद योग्य एकान्तस्थल में मौन होकर मलमूत्र त्याग करके हस्तप्रक्षालन, मुखप्रक्षालन एवं पादप्रक्षालन करके आचमन करे। फिर स्नान करे।

मूत्रे पुरीषे भुक्त्यन्ते रेतःप्रस्रवणे तथा।
चतुरष्टद्विषड्द्व्यष्ट-गण्डूषैः शुद्धिमाप्नुयात्॥ (नागदेव)

केवल मूत्र त्याग, मल त्याग, भोजन, वीर्य का क्षरण—इन चार के बाद क्रमशः ४, ८, १२ और १६ बार शुद्ध जल से कुल्ला करने पर ही मनुष्य शुद्ध होता है। कुल्ला करके हमेशा अपनी बायीं ओर ही थूकना चाहिए; अन्यत्र नहीं। (क्यों कि सामने समस्त देवता, दाहिने पितृगण और पीछे सारे ऋषि समूह की सन्निधि मानी जाती है)।

स्नान—

दन्तधावन के बाद मुखप्रक्षालन करके, भगवान् सूर्य एवं नारायण का इस प्रकार स्मरण करें—

आदित्यस्य नमस्कारं ये कुर्वन्ति दिनेदिने।
जन्मान्तरसहस्रेषु दारिद्र्यं नोपजायते॥
आपो नारायणोद्भूतास्ता एवास्यायनं पुनः।
तस्मान्नारायणं देवं स्नानकाले स्मरेद्बुधः॥

जलाशय के पास जाकर अपने ऊपर प्रोक्षण करें (जल छिड़कें)

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपि वा।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

फिर जल को स्पर्श कर तीर्थराज का आवाहन करें :—

त्वं राजा सर्वतीर्थानां त्वमेव जगतः पिता।
याचितं देहि मे तीर्थं तीर्थराज नमोस्तुते॥
पुष्कराद्यानि तीर्थानि गंगाद्याः सरितस्तथा।
आगच्छन्तु पवित्राणि स्नानकाले सदा मम॥

फिर तीर्थ को नमस्कार करके दक्षिण हस्त में जल लेकर संकल्प करें कि "परमेश्वर प्रीति के लिए मैं आज प्रातः स्नान करता हूँ।" तदनन्तर पैर, मुँह, यज्ञोपवीत पहले धोकर, फिर जल में प्रवेश करके स्नान करें। स्नान के समय प्रातःस्मरणादि श्लोकों का पाठ करें।

आचार्यों का विधान है कि, "शरीर की अस्वस्थता या काल–देशादि के बन्धन के कारण जल से पूरे शरीर को नहलाना (वरुणस्नान) सम्भव न हो तो; उस आपत्ति काल में गीले वस्त्र से सर्वाङ्ग-मार्जन (पोंछने) से "कपिलस्नान" सिद्ध हो जाता है। इसमें भी असमर्थ हों तो मन्त्रों से शुद्ध भस्मों को धारण करने पर "आग्नेयस्नान" की शुद्धि होती है। इसमें भी असमर्थ होने पर आत्मचिन्तन के द्वारा ही "मानसस्नान" माना जाता है। आपत्ति रहित काल में भी आलस्य, कायक्लेश, भय आदि के कारण इन स्नानों का आचरण करने वाला "मलभक्षण" समान दोष का भागी बनता है।

स्नान के बाद शरीर पोंछ के शुद्ध सूखे वस्त्र व उपवस्त्र धारण करें। जमीन पर गीले वस्त्र पहनकर और पानी में सूखे वस्त्र पहनकर उपासना करना निषेध है। एक ही वस्त्र पहन कर भी जप, पूजा, पाठ आदि नहीं करना चाहिए।

भस्मधारण—

भस्म से ललाट में तिलक किये बिना सन्ध्या, पूजा आदि सब कार्य निष्फल होते हैं। अतः 'ॐ अग्निरिति भस्म, वायुरिति भस्म, जलमिति भस्म, स्थलमितिभस्म, व्योमितिभस्म। सर्वं ह वा इदं भस्म। मन एतानि चक्षूंषि भस्म॥' इस मन्त्र से भस्म को हथेली में जल के साथ मिलावें। फिर, दक्षिण कर को प्रथम तीन अँगुलियों द्वारा ललाट, कण्ठ, हृदय, दोनों स्कन्ध, नाभि आदि स्थानों में भीगी भस्म लगायें। उस समय रुद्री के 'त्र्यंम्बकं यजामहे......' 'त्र्यायुषं......' इन दोनों मन्त्रों का उच्चारण करें। (विस्तृत भस्मधारणविधि "शिवगीता" की टिप्पणी में है)। भस्म वाले हाथ को धोकर उस जल को प्रमादवश जमीन पर न गिरावें, उसे मुँह में या सिर पर धारण करें। तदनन्तर रुद्राक्षमाला आदि उपलब्ध हो, तो धारण करनी चाहिये।

अरुद्राक्षो जपः पुंसां तावन्मात्रफलप्रदः।
यस्यांगे ह्यस्ति रुद्राक्ष एकोपि बहुपुण्यदः॥

बिना रुद्राक्ष धारण किये ही सम्पन्न जप का साधारण फल है। जिसके अंग पर एक भी रुद्राक्ष मणि विद्यमान हो, उसका जप, पूजन आदि बहुत अधिक पुण्य देने वाला होता है। अतः यत्न करके रुद्राक्ष को धारण करना चाहिए।

इसके बाद यज्ञोपवीतधारी पुरुष को प्रातः सन्ध्या करना अनिवार्य है। यज्ञोपवीतरहित हो तो—

एहि सूर्य सहस्रांशो तेजोराशे जगत्पते।
अनुकम्पय मां भक्त्या गृहाणार्घ्यं दिवाकर॥

इस मन्त्र से अर्घ्यपात्र में जल, कुश, पुष्प, चन्दन, अक्षत आदि डालकर सूर्य को समर्पित करें और अपना गुरु-प्रदत्त इष्ट मंत्र का ध्यानपूर्वक जप करें। मन्त्रजप, देवपूजा आदि कृत्यों में सर्वप्रथम आचमन व प्राणायाम किया जाता है, जिससे इन "स्थूल-सूक्ष्म-कारण" शरीर-त्रय की शुद्धि एवं स्थिरता होती है।

आचमन—

आचमन श्रौत, स्मार्त, पौराणिक, तान्त्रिक आदि मन्त्रभेदों से ६ प्रकार से उपलब्ध हैं। सर्वोपयोगी सरल आचमन इस प्रकार हैं :—(हाथ में थोड़ा जल लें) "ॐ नमो भगवते (रुद्राय) इति दशाक्षर मन्त्रस्य प्रजापारी ऋषिः, रुद्रो देवता, विराट छन्दः, आचमने विनियोगः"—यह विनियोग बोलकर छोड़ दें। फिर तीन बार "ॐ नमो भगवते रुद्राय स्वाहा" कहके दायीं हथेली में थोड़ा जल लेकर ३ बार पी लें। फिर "ॐ नमो भगवते रुद्राय" से हाथ धो लें।

प्राणायाम—

दक्षिण नासिका को दक्षिण अंगुष्ठ से बन्द कर, वाम नासिका से शनैः

शनैः श्वास लें। इसे 'पूरक' कहते हैं। वाम नासिका को भी मध्यम अनामिका अंगुली से बन्द करके 'कुम्भक' नामक प्राणनिरोध करें। फिर अंगुष्ठ को हटाकर दक्षिण नासिका से श्वास धीरे-धीरे बाहर निकालें। फिर उसी नासिका से पूर्ववत् 'पूरक' करके कुम्भकानन्तर वाम नासिका से 'रेचक' करें। यह एक प्राणायाम है। इस प्रकार ३ प्राणायाम करके देवपूजन करना चाहिए।

प्राणायाम के समय की मात्रा होती है। 'पूरक' के समय "ॐ नमो भगवते रुद्राय" इस मन्त्र का १ या २ या ४ बार स्मरण करें तो तदनुरूप 'कुम्भक' में ४ या ८ या १६ बार एवं 'रेचक' में २ या ४ या ८ बार युक्त मन्त्र का स्मरण करना चाहिए।

पूजाविधि—

संध्या एवं गायत्री या इष्ट मन्त्र का जप समाप्त करने के बाद ही देव पूजन करने का विधान है। पूर्व या उत्तराभिमुख होकर बैठें। शिवलिंग (विग्रह या यन्त्र) के पास बैठें। शिवलिंग की पीठभूत जलहरी हमेशा उत्तराभिमुख होनी चाहिये। सारी पूजा सामग्री को आसन के पास तैयार रखें। आचमन प्राणायाम करके हाथ में अक्षत (बिना टूटे हुए चावल) लेकर निम्नलिखित "स्वस्ति-वाचन" करके अक्षत देवता पर छोड़ दें।

ॐ स्वस्तिनऽइन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्तिनस्तार्क्ष्योऽअरिष्टनेमिः स्वस्तिनोबृहस्पतिर्दधातु ॥ १ ॥ ॐ पयः पृथिव्यां पयऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः। पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥

ॐ व्विष्णो'रराटमसि विष्णोःश्नप्त्रेस्थो विष्णोः स्यूरसि व्विष्णो'र्द्धुवोऽसि । वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ॥ ३ ॥ अग्निर्देवता व्वातो' देवता सूर्यो' देवता' चन्द्रमा' देवता व्वसवो देवता' रुद्रा देवता'दित्या देवता' मरुतो' देवता विश्वे'देवा देवता बृहस्पति'र्देवतेन्द्रो' देवता व्वरुणो देवता' ॥ ४ ॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरि'क्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः । व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे' देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥५॥ विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परा'सुव । यद् भद्रं तन्न ऽआसुव ॥६॥ इमा रुद्राय तवसे' कपर्दिने' क्षयद्वी'राय प्रभरामहे मतीः । यथा शमसद्द्विपदे चतु-ष्पदे विश्वं पुष्टं ग्रामे' अस्मिन्ननातुरम् ॥ ७ ॥

एतन्ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव ॥८॥ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञᳫ समिमं दधातु। विश्वे देवास इह मादयन्तामो३म् प्रतिष्ठ ॥ ९ ॥ एष वै प्रतिष्ठा नाम यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ॥१०॥

प्रार्थना (हाथ जोड़कर)—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेत् शृणुयादपि॥
विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥

शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये॥

अभिप्सितार्थं सिद्ध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः।
सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥

वक्रतुण्डमहाकाय सूर्यकोटसमप्रभः ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव सर्वकार्येषु सर्वदा ॥
सर्वमंगलमांगल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणि नमोस्तुते ॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्माविष्णुमहेश्वरान् ।
सरस्वतीं प्रणम्यादौ शुभं कर्म समारभेत् ॥

श्री मन्महागणाधिपतये नमः, उमामहेश्वराभ्यां नमः, लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः, वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः, शचीपुरन्दराभ्यां नमः, इष्टदेवताभ्यो नमः, कुलदेवताभ्यो नमः, ग्रामदेवताभ्यो नमः, स्थानदेवताभ्यो नमः, वास्तुदेवताभ्यो नमः, एतत्कर्मप्रधानदेवताभ्यो नमः, सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः, सर्वेभ्यो महापुरुषेभ्यो नमः ।

संकल्प—

(दक्षिण हाथ में जल, अक्षत, गंध, पुष्प, दुर्वा आदि मंगल द्रव्य लेकर)

"ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणः द्वितीये परार्द्धे श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे—क्षेत्रे,—नगरे,—नाम संवत्सरे,—अयने,—मासे,—पक्षे,—पुण्यतिथौ,—वासरे सर्वेषु ग्रहेषु यथायथंराशिस्थानस्थितेषु,—नामा,—गोत्रोत्पन्नोहं,—देवता प्रीत्यर्थं यथाज्ञानं यथामिलितोपचारैः पूजनं करिष्ये" बोलकर जल छोड़ देना ।

कलशपूजन—

कलश को जल से भरके अपने वाम भाग में रखें और हाथ में अक्षत लेकर वरुण का आवाहन करें—

सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि जलदा नदाः ।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥
कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्रस्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
ऋग्वेदोथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ।
अंगैश्च सहिताः सर्वे कलशे तु समाश्रिताः ॥

अक्षत को कलश के ऊपर छोड़ दें। गन्धाक्षतपुष्प से कलश की पूजा करके कलश के ऊपर हाथ रखकर वरुणमन्त्र बोले—

"ॐ वरुणस्योत्तम्भनमसि वरुणस्य स्कम्भसर्जनीस्थो वरुणस्य ऋत सदन्यसि वरुणस्य ऋत सदनमसि वरुणस्य ऋतसदनमासीद ।"

ॐ (भूर्भुवः स्वः) कलशस्थ वरुणाय नमः, वं वरुणं आवाहयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि ।

कलश के ऊपर 'धेनुमुद्रा' एवं 'मत्स्यमुद्रा' का प्रदर्शन करके "वं वरुणाय नमः" का १० बार जप करें। गंधाक्षतपुष्प, जल में डालकर 'अंकुशमुद्रा' से तीर्थों का आवाहन करें—

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥

प्रोक्षण—

कलश के जल को पूजापात्र में लेकर उससे निम्नलिखित मन्त्रोच्चारण-पूर्वक देवता, पूजाद्रव्य एवं स्वयं के ऊपर प्रोक्षण करें—

ॐ आपोहिष्ठा मयोभुवस्तान ऊर्जेधातन । महे रणाय चक्षसे ॥ यो वः

शिवतमो रसस्तस्य भाजयते ह नः । उशतीरिव मातरः ॥ तस्मा अरंगमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ आपो जनयथा च नः ॥

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोपिवा ।
यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥

आसन शुद्धि—

ॐ पृथ्वी त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता ।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम् ॥

यह कहकर अपने दाहिने भाग के आसन के अग्र कोण के नीचे चन्दन या जल से त्रिकोण करके गन्धाक्षतपुष्प समर्पण करें । और हाथ जोड़कर प्रार्थना करें—

ॐ आधारशक्तये नमः, ॐ कूर्मासनाय नमः, ॐ अनन्तासनाय नमः, ॐ विमलासनाय नमः, ॐ आत्मासनाय नमः ।

दिग्बन्ध—

ॐ अपसर्पन्तु ये भूता ये भूता भूमिसंस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥
अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाः सर्वतो दिशम् ।
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समारभे ॥

यह कहते हुए चारों ओर, ऊपर और नीचे जल या अक्षत छिड़क दें । तत्पश्चात् स्ववाम-पार्ष्णि (बाईं एडी) से भूमि पर तीन बार आघात करें ।

भूमि-शुद्धि—

भूमि पर हाथ रखकर यह मन्त्र बोलें :—

ॐ भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वधाया। विश्वस्य भुवनस्य धर्त्री। पृथिवीं यच्छ पृथिवीं दृ॑ह पृथिवीं मा हि॑ सीः॥

भैरव-नमस्कार—

पूजा प्रारंभ करने के लिये भैरव से हाथ जोड़कर इस प्रकार अनुमति की याचना करें—

ॐ यो भूतानामधिपतिर्यस्मिन् लोका अधिश्रिताः। य ईशे महतो महाँस्तेन गृह्णामि त्वामहं मयि गृह्णामि त्वामहम्॥
ॐ तिक्ष्णदंष्ट्र, महाकाय, कल्पान्तदहनोपम। भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि॥ ॐ भं भैरवाय नमः॥

भूत-शुद्धि—

शास्त्र या गुरु के उपदेश के अनुसार इन्द्रिय या मन का संयम करके अपने शरीर के पंचमहाभूतों को ध्यान के द्वारा एक दूसरे में लय करते हुए, **"केवल चिन्मात्र स्वरूप में स्थित होकर, सहस्रार से निःसृत अमृत-वर्षा के द्वारा, सारा शरीर दिव्य हो गया है।"** ऐसी भावना करें। जीवात्मा और परमात्मा की एकता का **"ॐ हंसः सोहं"** इस मन्त्र द्वारा (तनिक) अनुसंधान करें।

अपि सर्वं नदीतोयैर्मृत्कूटैश्चाथ गोरसैः।
आपातमाचरेच्छौच भावदुष्टो न शुद्धयति॥
नक्तं दिवं निमज्ज्याप्सु कैवर्ताः किमु पावनाः।
शतशोऽपि तथा स्नाता न शुद्धा भावदूषिताः॥
(काशी खण्ड)

अर्थात्—समस्त नदी तीर्थों के जल से, शुद्ध मृत्तिका के पहाड़ों के पहाड़ों से और गोमूत्रादि अन्य पवित्रीकरण सामग्री से भी ऊपर के स्थूल शरीरमात्र की शुद्धि करके भावदोषों को मन में सुरक्षित रखने वालों का शौचाचरण वास्तव में पूर्ण नहीं है। क्या रात दिन जल में निमज्जित होने वाले मल्लाह, मछुवे आदि पवित्र माने जायेंगे ? अतः कामक्रोधादि भावनावों से शुद्ध होकर केवल परमात्म भावना से युक्त होना आवश्यक हैं।

फिर "ॐ शंखस्य देवतायै नमः" से शंख पूजन एवं "घंटास्थ देवतायै नमः" से घंटापूजन और घंटानाद करे। स्नान, धूप, दीप, नैवेद्य, नीराजन आदि के समय घंटा वादन करना चाहिये।

दीपक-पूजन—

दीपक को प्रज्ज्वलित करके त्रिकोण चन्दन यन्त्र पर प्रतिष्ठापित करके गन्धाक्षत से इस प्रकार पूजन करें—

ॐ अग्निर्ज्योतिर्ज्योतिरग्निः स्वाहा; सूर्यो ज्योतिर्ज्योतिः सूर्यः स्वाहा। अग्निर्वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा सूर्यो वर्चो ज्योतिर्वर्चः स्वाहा। ज्योतिः सूर्यः सूर्यो ज्योतिः स्वाहा॥

भो दीप देवी रूपस्त्वं कर्मसाक्षि ह्यविघ्नकृत्।
यावत्कर्मसमाप्तिस्यात् तावत्त्वं सुस्थिरोभव॥

दीपक घी या तिल तेल का होना चाहिये। इन दोनों के मिश्रण या अन्य तेल का निषेध है। घी का दीपक देव के दक्षिण भाग में व तैल का का दीपक वाम भाग में होना चाहिये। धूप को जलाकर वाम भाग में या आगे रखें, दाहिनी ओर नहीं।

गणेश पूजन

ध्यान-आवाहन—

ॐ गणानां त्वा गणपतिᳪहवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिᳪ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिᳪहवामहे व्वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

एकदन्तं शूर्पकर्णं वरदाभयहस्तकम्।
पाशांकुशधरं देवं ध्यायेत् सिद्धिविनायकम्॥

ॐ गं गणपतये नमः गणपतिं आवाहयामि, ध्यायामि, पूजयामि—यह बोलकर गणेश भगवान् की मूर्ति (या अक्षत पर स्थापित सुपारी) का क्रमशः आसन, पाद्य, अर्घ्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, यज्ञोपवीत, चन्दन, अक्षत, दुर्वा, पुष्प, बिल्वपत्र, अबीर गुलाल, धूप, दीप, नैवेद्य, फल, ताम्बूल दक्षिणा, कर्पूर आरती आदि से पूजन करे। सब उपचार को "ॐ गं गणपतये नमः" मन्त्र से ही अर्पित करे। जैसे भगवान शंकर को बिल्वदल, विष्णु को तुलसी, शक्ति को जपा, सूर्य को लाल कनेर पुष्प प्रिय हैं; वैसे गणेश को दुर्वांकुर विशेष रूप से समर्पित होता है। दुर्वा का मन्त्र इस प्रकार है।—

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती परुषः परुषस्परि। एवा नो दूर्वे प्रतनु सहस्रेण शतेन च॥

त्वं दूर्वेऽमृतजन्मासि वन्दितासि सुरासुरैः।
सौभाग्यं सन्ततिं देहि सर्वकामकरी भव॥

आरती के बाद नमस्कार, प्रदक्षिणा पूर्वक पुष्पांजलि देकर प्रार्थना करें—

विघ्नेश्वराय वरदाय सुरप्रियाय, लम्बोदराय सकलाय जगद्धिताय।
नागाननाय सुरयज्ञविभूषिताय, गौरीसुताय गणनाथ नमो नमस्ते॥

ॐ गं गणपतये नमः, नमस्करोमि, प्रसन्नो भव, वरदो भव। अनेन पूजनेन श्रीमन्महागणाधिपतिः प्रियन्ताम्—ऐसा कहकर दक्षिण हाथ में जल ले गणेश पूजन विसर्जित करें।

शिवपूजन—

भगवान की पूजा 'आवाहन' से लेकर "पादुकान्दर्शव्यजनछत्रचामरवाद्य-नृत्य आदि" राजोपचारों से की जा सकती है। यह अशक्य हो तो षोडश उपचारों से करें या अर्घ्य, पाद्य, आचमन, स्नान, वस्त्र, गन्धाक्षत, पुष्प, धूप, दीप और नैवेद्य से दशोपचार ही से करें। यदि इससे भी संक्षेप में करना हो तो दशोपचार के मात्र अंतिम पांच उपचारों से भी पूजन हो सकता है यहाँ षोडशोचपार का क्रम दिया जाता है जो द्विज इन उपचारों को वैदिक मन्त्रों से करने में समर्थ हैं, वे नीलसूक्त (रुद्री के प्रथम १६) मन्त्रों को क्रमशः इन षोडश उपचारों के लिए प्रयुक्त करें। इन मन्त्रों का पूरा रूप शतरुद्री के प्रसंग में दिया हुआ है, अतः प्रत्येक पूजा उपचार के संबन्ध में केवल प्रथम शब्द का ही उल्लेख हैं। इसी प्रकार भगवती के लिए श्रीसूक्त क १६ मन्त्रों का प्रयोग होता है। अतः इनको भी इसी ग्रन्थ के अन्त में दिया है।

ध्यान—

शुद्धस्फटिकसंकाशं त्रिनेत्रं पंचवक्त्रकम्।
व्याघ्रचर्मपरीधानं विश्वेशं वृषभध्वजम्॥

गंगाधरं दशभुजं नागयज्ञोपवीतकम् ।
नीलग्रीवं शशांकाङ्कं सर्वाभरणभूषितम् ॥
कमण्डल्वक्षसूत्राभ्या-मन्वितं शूलपाणिनम् ।
ज्वलन्तं पिंगलजटा-जूटमुद्योतकारिणम् ॥
अमृतेनाप्लुतं हृष्ट-मुमादेहार्धधारिणम् ।
दिव्यसिंहासनासीनं दिव्यभोगसमन्वितम् ॥
नित्यं च शाश्वतं शुद्धं ध्रुवमक्षरमव्ययम् ॥
एवं ध्यात्वा द्विजः सम्यक् ततो यजनमारभेत् ॥

ॐ नमः शंभवायच ...... शिवतराय च ।
उमामहेश्वराभ्यां नमः ध्यानं समर्पयामि ॥

आवाहन—

एह्येहि गौरीश पिनाकपाणे
शशांकमौले वृषभाधिरूढ़ ।
देवाधिदेवेश महेश नित्यं
गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥

ॐ नमस्ते ...... । ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः आवाहनं समर्पयामि (अक्षत छिड़क दे) ।

आसन—

रम्यं सुशोभनं दिव्यं सर्वसौख्यकरं शुभम् ।
आसनं च मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ याते रुद्रशिवा ··· ॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आसनार्थं पुष्पं समर्पयामि (फूल चढ़ावे)

पाद्य—

उष्णोदकं निर्मलं च सर्वसौगन्ध्यसंयुतम् ।
पादप्रक्षालनार्थाय दत्तं ते प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ यामिषु ··· ॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पादयोः पाद्यं समर्पयामि (चरणारविन्दों में जल छोड़ दें)

अर्घ्य—

नमस्ते देवदेवेश नमस्ते करुणाम्बुधे ।
करुणां कुरु मे देव गृहाणार्घ्यं नमोस्तुते ॥

ॐ शिवेनवचसा ··· ॥ श्रीउमा महेश्वराभ्यां नमः हस्तयोरर्घ्यं समर्पयामि । अर्घ्यं पात्र में गन्धाक्षतपुष्पादि मंगल द्रव्य के साथ जल लेकर भगवान के हाथ में समर्पित करें)

आचमन—

सर्वतीर्थसमायुक्तं सुगन्धिनिर्मलं जलम् ।
आचम्यतां मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ अध्यवोच ··· ॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः आचमनीयं जलं समर्पयामि । (तीन बार आचमन करावें)

स्नान—

गंगासरस्वतीरेवापयोष्णीनर्मदाजलैः ।
स्नापितोसि मया देव ततः शान्तिं प्रयच्छमे ॥

ॐ असौ यस्ताम्रो ... ॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः स्नानीयं जलं समर्पयामि (स्नान करावें)

पय स्नान—

कामधेनु समुत्पन्नं सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावकं यज्ञहेतुश्च पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

ॐ पयः ... ... ॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पयः स्नानं समर्पयामि, पयः स्नातान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । (पहले दूध, फिर जल चढ़ावे)

दधिस्नान—

पयसस्तु समुद्भूतं मधुराम्लं शशिप्रभम् ।
दध्यानीतं मया देव स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ दधिक्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभि नो मुखा करत् प्रण आयूँ षितारिषत् ॥

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः दधिस्नानं समर्पयामि । दधिस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । (पहले दहि, फिर जल चढ़ावें।)

घृतस्नान—

नवनीतसमुत्पन्नं सर्वसन्तोषकारकम् ।
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि स्नानार्थं प्रति गृह्यताम् ॥
ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनिर्घृते श्रितो घृतम्वस्य धाम ।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहाकृतं वृषभवक्षि हव्यम् ॥

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः घृतस्नानं समर्पयामि । घृतस्नानान्ते शुद्धोदकं, स्नानं समर्पयामि । (पहले घी, फिर जल चढ़ावें) ।

मधुस्नान—

तरुपुष्पसमुद्भूतं सुस्वादु मधुरं मधु ।
तेजः पुष्टिकरं दिव्यं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ मधुवाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव गुँ रजः । मधु द्यौरस्तुनः पिता ॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ २ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मधुस्नानं समर्पयामि । मधुस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । (पहले शहद, फिर जल चढ़ावें)।

शर्करास्नान—

इक्षुसार समुद्भूता शर्करा पुष्टिकारिका ।
मलापहारिका दिव्या स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ अपा ँ् रसमुद्वयस ँ् सूर्यें सन्त ँ् समाहितम् । अपा ँ् रसस्ययो रसस्तं वो गृह्णाम्युत्तममुपयामगृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टं गृह्णाम्येषते योनिरिन्द्राय त्वा जुष्टतमम् ॥ ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः शर्करास्नानं समर्पयामि । शर्करास्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । (पहले शर्करा, फिर जल चढ़ावें) ।

पंचामृतस्नान—

अलग न हो सके तो, उपर्युक्त दूध आदि पांचों को मिलाकर स्नान करावें—

पयोदधि घृतं चैव मधु च शर्करायुतम् ।
पञ्चामृतं मयानीतं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ पञ्च नद्यः सरस्वतीमपियन्ति सस्रोतसः ।
सरस्वती तु पञ्चधा सो देशेभवत्सरित् ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पञ्चामृतस्नानं समर्पयामि । पञ्चामृत स्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि । (जल से स्नान करावें) ।

गन्धोदकस्नान—

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्य पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां त्वामिहोपह्वये श्रियम् ॥

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः गन्धोदकस्नानं समर्पयामि । गन्धोदकस्नानान्ते शुद्धोदकस्नानं समर्पयामि (गुलाब, जल चढ़ावें) ।

उद्वर्तस्नान—

नानासुगन्धिद्रव्याणि चन्दनं रजनीयुतम् ।
उद्वर्तनं मया दत्तं स्नानार्थं प्रतिगृह्यताम् ॥
ॐ अगुंशुना ते अगुंशुः पृच्यतां परुषापरुः ।
गन्धस्ते सोममवतु मदाय रसोऽअच्युतः ॥

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः उद्वर्त स्नानं समर्पयामि । (जल में सुगन्धि द्रव्य डालकर चढ़ावें) ।

शुद्धोदकस्नान—

ॐ शुद्ध बालः सर्वशुद्धबालो मणि-बालस्त आश्विनाः । श्येतः श्येताक्षौरुणास्ते रुद्राय पशुपतये कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभोरूपाः पार्जन्याः ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः शुद्धोदकं स्नानं समर्पयामि । शुद्ध जल से नहलावें । फिर आचमन करावें । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः स्नानान्ते आचमनं समर्पयामि ।

वस्त्र—

विग्रह को शुद्ध रुमाल से पोंछकर वस्त्र एवं उपवस्त्र (या उसके अभाव में रक्त सूत्र) चढ़ावें—

सर्वभूषाधिके सौम्ये लोकलज्जा निवारणे ।
मयोपपादिते तुभ्यं वाससी प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ असौ यो वसर्पति............॥ उमा महेश्वराभ्यां नमः वस्त्रोपवस्त्रं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीत—

नवभिस्तन्तु भियुक्तं त्रिगुणं देवता मयम् ।
उपवीतं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ नमोऽस्तु नीलग्रीवाय............॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः यज्ञोपवीतं समर्पयामि । आचमनं समर्पयामि ।

यज्ञोपवीत पहनाकर आचमन करावें ।

गन्ध—

श्री खण्डं चन्दनं दिव्यं गन्धाढ्यं सुमनोहरम् ।
विलेपनं सुरश्रेष्ठ चन्दनं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ प्रमुञ्चधन्व............॥ उमामहेश्वराभ्यां नमः गन्धं समर्पयामि । (चन्दन चढ़ावें) ।

अक्षत—

अक्षताश्च सुरश्रेष्ठ कुंकुमाक्ता सुशोभिताः ।
मया निवेदिता भक्त्या गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ अक्षन्नमीमदन्तहयवप्रिया अधूषत । अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामती योजान्विद्रते हरी । उमामहेश्वराभ्यां नमः अक्षतान् समर्पयामि । (अक्षत चढ़ावें) ।

पुष्प—

माल्यादीनि सुगन्धीनि मालत्यादीनि वै प्रभो ।
मयानीतानि पुष्पाणि गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ विज्ज्यन्धनुः······॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः पुष्पाणि समर्पयामि (पुष्प, मध्यमा एवं अनामिका से ही उठाकर भगवान को चढ़ाना चाहिए निर्माल्य विसर्जन में अंगुष्ठ व तर्जनी का प्रयोग विहित है)।

बिल्वपत्र—

त्रिदलं त्रिगुणाकारं त्रिनेत्रं च त्रिधायुधम् ।
त्रिजन्मपापसंहार मेकं बिल्वं शिवार्पणम् ॥

ॐ नमो बिल्मिनेच कवचिनेच नमोवर्मिणेच वरूथिनेच नमः श्रुतायच श्रुतसेनायच नमो दुन्दुभ्यायचाहनन्यायच । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः बिल्वपत्रं समर्पयामि ।

(बिल्वपत्र वज्ररहित तीन दल वाला ही चढ़ावें) ।

सौभाग्यद्रव्य—

हरिद्रां कुंकुमं चैव सिन्दूरं कज्जलान्वितम् ।
सौभाग्यद्रव्यसंयुक्तं गृहाण परमेश्वर ॥

ॐ अहिरिव भोगैः पर्येति बाहुज्ज्याया हेतिम्परिबाधमानः हस्तघ्नो विश्वा वयुनानि विद्वान् पुमान् पुमाँ संपरिपातु विश्वतः ॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः सौभाग्य द्रव्याणि समर्पयामि ।

(अबीर गुलाल आदि चढ़ावें) ।

धूप—

ॐ याते हेतिर……॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः धूपमाघ्रापयामि ।
(अगरबत्ती या गुगुल आदि जलाकर देवको दिखाते समय धूपपात्र को मध्यमा, अनामिका व अंगुष्ठ के अग्रभाग से धारण करें ।

वनस्पतिरसोद्भूतो गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्वदेवानां धूपोयं प्रतिगृह्यताम् ॥

दीप—

आज्यवर्तिसमायुक्तं वह्निना योजितंमया ।
दीपं गृहाण देवेश त्रैलोक्य तिमिरापहम् ॥

ॐ परितो धन्वतो……॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः दीपं दर्शयामि ।
दीपक प्रज्वलित हो तो उसके उपर अक्षत छोड़ दें फिर हाथ धो के नंवे द्य सामने रखें ।

नैवेद्यं—

शर्करा घृत संयुक्तं मधुरं स्वादुचोत्तमम् ।
उपहार समायुक्तं नैवेद्यं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ अवतत्य······॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नैवेद्यं निवेदयामि । नैवेद्य के उपर बिल्वपत्र या पुष्प रख के रुद्रगायत्री से प्रोक्षण करें । फिर धेनुमुद्रा दिखाकर ३ बार तालि बजावें । फिर ग्रास मुद्रा से ॐ प्राणाय स्वाहा ॐ अपानाय स्वाहा, ॐ व्यानाय स्वाहा, ॐ उदानाय स्वाहा, ॐ समानाय स्वाहा ऐसा कहकर ३ बार आचमन करावें । घण्टा वादन करने के बाद नेत्र बन्द करके शिव मन्त्र का ११ बार जप करें । फिर घण्टा वादन के पश्चात् निम्न प्रकार से जल दें ।

ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः नैवेद्यान्ते मध्ये पानीयं, उत्तरा पोषणं, हस्त-प्रक्षालनं, मुखप्रक्षालनं च समर्पयामि । (इतना बोलकर जलपात्र में चार आचमनी जल छोड़ दें ।) करोद्वर्तनार्थे चन्दनं समर्पयामि । (भगवान के हाथों में चन्दन दें)।

फलम्—

इदं फलं मया देव स्थापितं पुरतस्तव ।
तेन मे सफलावाप्तिर्भवेज्जन्मनि जन्मनि ॥

ॐ याः फलनीर्या फला अपुष्पा याश्चपुष्पिणी बृहस्पतिप्रसूतास्तानो मुञ्चन्त्व हू सः । ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः ऋतुफलानि समर्पयामि । (केला, बेर आदि फल समर्पित करें) ।

ताम्बूलम्—

पूगीफलं महादिव्यं नागवल्ली दलैर्युतम् ।
एलालवङ्ग संयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

ॐ नमस्त आयुधाया·········॥ ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः मुखशुद्धयर्थं ताम्बूलं समर्पयामि। (पान, सुपारी, इलायची आदि समर्पित करें)।

दक्षिणा—

हिरण्यगर्भ गर्भस्थं हेमबीजं विभावसोः।
अनन्त पुण्य फलदं अतः शान्ति प्रयच्छ मे ॥

ॐ हिरण्य गर्भः समवर्तताग्रे भूतस्य जातः पतिरेक आसीत्।
सदाधार पृथिवी न्द्यामुतेमाङ् कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः सांगता सिद्धयर्थं हिरण्यगर्भ दक्षिणां समर्पयामि।

इतना बोलकर यथाशक्ति सुवर्ण रौप्यमुद्रादि दक्षिणा के स्वरूप में अर्पण करें। यदि अभिषेक करना हो तो यहाँ नमस्कार पूर्वक पूजन समाप्त करके देव विग्रह के ऊपर के निर्माल्य पुष्पादि का विसर्जन करे। विग्रह के ऊपर जल अभिषेक पात्र निर्मित कर गंधाक्षत से पूजा करें। पश्चात् जल भरके विग्रह के ऊपर जलधारा को प्रवाहित करते हुए संकल्प व न्यास पूर्वक रुद्री का पाठ करें। अभिषेकान्तर विग्रह को पोंछ कर इत्र आदि सुगन्धित द्रव्य का लेप "त्र्यंबकं यजामहे····" मन्त्र से करें। फिर, उत्तरपूजार्थ गन्धाक्षत पुष्पमाला आदि से भगवान को अलंकृत करें। सम्भव हो तो सहस्रनाम या अष्टोत्तरशत नामोंसे बिल्वपत्र या पुष्पके द्वारा अर्चना करें।

नीराजन—

नौ या पाँच दीप जला के आरती पात्र में रख कर, गंधाक्षतादि से उसकी पूजा कर दायें हाथ में आरती उठाकर, बायें हाथ से घंटी बजाते हुए देव के

सामने नीराजन करना चाहिये। केवल कर्पूर से भी आरती हो सकती है। उस समय के मन्त्रः—

ॐ इदँ हविः प्रजननम्मे अस्तु दशवीरँ सर्वगणँ स्वस्तये।
आत्मसनि प्रजासनि पशुसनि लोकसन्यभयसनिः।
अग्निः प्रजां बहुलां मे करोत्वन्नं पयो रेतोऽस्मासु धत्त ॥२॥

ॐ अग्निर्देवता पृ० ८ (मन्त्र ४)

कर्पूर गौरं करुणावतारं संसारसारं भुजगेन्द्रहारम्।
सदा वसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानी सहितं नमामी ॥

आरती नीचे रखके उसके ऊपर जल घुमा के छोड़ दे फिर हाथ धोकर जल भरे पात्रको देवके ऊपर ३ बार घुमा के जल आरती करें। उस समय ॐ द्यौः शान्तिः (पृ० ८ मन्त्र ५ को) बोलना चाहिये।

प्रदक्षिणा—

यानि कानि च पापानि जन्मान्तर कृतानि च।
तानि-तानि प्रणश्यन्तु प्रदक्षिण पदे-पदे ॥

ॐ मानो महान्त'''॥ ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः प्रदक्षिणां समर्पयामि। नमस्करोमि। नमस्कार करके हाथ में पुष्प बिल्वपत्र आदि लेके इन मन्त्रों से पुष्पांजलि समर्पित करें :—

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन्।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे सध्याः सन्ति देवाः ॥

ॐ राजाधिराजाय प्रसह्यसाहिने नमो वयं वैश्रवणाय

कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु ॥ कुबेराय वैश्रवणाय महाराजाय नमः ॥

ॐ स्वस्ति । साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं वैराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यमयं समन्तपर्यायी स्यात् सार्वभौमः सार्वायुष आन्तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्रपर्यन्ताया एकराडिति तदप्येष श्लोकोऽभिगीतो मरुतः परिवेष्टारो मरुत्तस्यावसन्गृहे । आविक्षितस्य कामप्रेर्विश्वेदेवाः सभासद इति ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतोबाहुरुत विश्वतस्पात । सम्बाहुभ्यां धमति संपतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन् देव एकः ॥

नाना सुगन्धपुष्पाणि यथाकालोद्भवानि च ।
पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण परमेश्वर ॥

आवरणपूजा—

पूजा विसर्जन पूर्व भगवान के पाँच आवरणों में स्थित देवताओं के एवं पार्षदों के पूजन का विधान है। विस्तार भयसे आवरण पूजा का अत्यन्त संक्षिप्त रूप यहाँ दे रहे हैं। निम्नांकित मन्त्रों में प्रत्येक से गन्धाक्षत पुष्प का समर्पण करना है।

ॐ अघोराय नमः, ॐ पशुपतयेनमः, ॐ शिवायनमः, ॐ विरुपायनमः, ॐ विश्वरूपायनमः, ॐ त्र्यम्बकायनमः, ॐ भैरवायनमः, ॐ कपर्दिनेनमः, ॐ शूलपाणयेनमः, ॐ ईशानायनमः, ॐ महेशायनमः ।

ॐ शिवायै नमः, ॐ शंकरप्रियायैनमः, ॐ पार्वत्येनमः, ॐ गौर्यैनमः, ॐ कालिन्द्यैनमः, ॐ कोटिदेव्यै नमः, ॐ विश्वधारिण्यै नमः, ॐ विश्वमात्रे नमः, ॐ गंगादेव्यै नमः।

ॐ गणपतये नमः, ॐ स्वामिकार्तिकेयाय नमः, ॐ पुष्कराय नमः, ॐ कालिन्दाय नमः, ॐ कीर्तिमुखाय नमः, ॐ स्वामिकुमाराय नमः, ॐ षण्मुखाय नमः, ॐ वीरभद्राय नमः, ॐ नन्दीश्वराय नमः, ॐ सूर्याय नमः, ॐ अनन्ताय नमः। ॐ शर्वाय क्षितिमूर्तये नमः, ॐ भवाय जलमूर्तये नमः, ॐ उग्राय वायुमूर्तये नमः, ॐ रुद्रयाग्निमूर्तये नमः, ॐ भीमायाकाशमूर्तये नमः, ॐ पशुपतये यजमानमूर्तये नमः, ॐ महादेवाय सोममूर्तये नमः, ॐ ईशानाया सूर्यमूर्तये नमः, ॐ सदाशिवाय सगणपरिवाराय नमः

तदन्तर श्री शिवमानस पूजास्तोत्र, श्री शिवमहिम्न स्तोत्र आदि विभिन्न स्तुतियों से शंकर को तुष्ट करें। एवं न्यासादि पूर्वक शिवमन्त्र का यथाशक्ति जप करके उस जप को इस मन्त्र से शिवार्पण करदे—

ॐ गुह्यातिगुह्य गोप्ता त्वं गृहाणास्मद् कृतं जपं।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादात् महेश्वर ॥

क्षमा प्रार्थना—

आवाहनं न जानामि न जानामि विसर्जनम्।
पूजां चैव न जानामि क्षमस्व परमेश्वर ॥

मन्त्रहीनं क्रिया हीनं भक्तिहीनं सुरेश्वर ।
यत् पूजितं मयादेव परिपूर्णं त्वदस्तु मे ॥
यदक्षरं पदं भ्रष्टं मात्राहीनं च यद्भवेत् ।
तत् सर्वं क्षम्यतां देव प्रसीद परमेश्वर ॥
तव तत्त्वं न जानामि कीदृशोसि महेश्वर ।
यादृशोसि महादेव तादृशाय नमो नमः ॥
त्रिनेत्राय नमस्तुभ्यं उमादेहार्धधारिणे ।
त्रिशूलधारिणे तुभ्यं भूतानां पतयेनमः ॥
गंगाधर नमस्तुभ्यं वृषभध्वज नमोस्तुते ।
आशुतोष नमस्तुभ्यं भूयो-भूयो नमो नमः ॥

विशेषार्घ्य—

अन्यथा शरणं नास्ति त्वमेव शरणं मम ।
तस्मात् कारुण्य भावेन रक्ष मां परमेश्वर ॥
रक्ष-रक्ष महादेव रक्ष त्रैलोक्य रक्षक ।
भक्तानां अभयं कर्ता त्राता भव भवार्णवात् ॥
वरद त्वं वरं देहि वांछितं वांछितार्थद ।
अनेन सफलार्घ्येन फलदोस्तु सदा मम ॥

नमः शंभवायच ... ...

ॐ मानस्तो के ... ...

ॐ उमा महेश्वराभ्यां नमः विशेषार्घ्यं समर्पयामि । इसी प्रकार अर्घ्यपात्र

में जल, गन्धाक्षत, पुष्प, फल सुवर्णरौप्यमुद्रा आदि लेकर भगवान को समर्पित करने के बाद "अनया पूजया श्री उमा महेश्वरः प्रीयन्तां न मम" ये कहकर पूजा का विसर्जन करें ।

देवी पूजन—

शिवा पूजन का भी क्रम इसी प्रकार है । १६ उपचार श्री सूक्तों के मन्त्रों से किये जाते हैं । श्री देव्यथर्वशीर्ष या देवीसूक्त से अभिषेक करना चाहिये । देवी पूजन के कुछ विशेष मन्त्र नीचे दिये हैं ।

देवी ध्यान—

श्रीमात स्त्रिपुरे परात्परतरे देवि त्रिलोकीमहा-
सौन्दर्यार्णव-मन्थनोद्भव-सुधा-प्राचुर्यवर्णोज्ज्वलम् ।
उद्यद्भानुसहस्र-नूतनजपा-पुष्पप्रभं ते वपुः
स्वान्ते मे स्फुरतु त्रिकोणनिलयं ज्योतिर्मयं वाङ्मयम् ॥

ॐ अम्बेअम्बिकेऽम्बालिके न मा नयति कश्चन । सस्त्य-
श्वकः सुभद्रिकां काम्पीलवासिनीम् ॥

कनकमय वितर्दि शोभमानं
दिशिदिशि सुवर्णकुंभयुक्तम् ।
मणिमयमण्डपमध्य मेहि मात्तर्
मम कृपया हि समर्चनं गृहीतुम् ॥

देवीआवाहन—

महापद्म वनान्तस्थे कारणानन्द विग्रहे ।
सर्व भूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि ॥

नीराजन—

महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्
डमरुसदृशरूपानुनगोधूमदीपाम् ।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्तदीपानुकंपान्
भुवनजननि कुर्वे नित्यमारार्तिकं ते ॥

पुष्पांजलि—

चरणकमलयुग्मं पंकजैः पूजयित्वा
कनककमलमालाः कण्ठदेशेर्पयित्वा ।
शिरसि विनिहि तोयं रक्तपुष्पांजलिस्ते
हृदयकमलमध्ये देवि हर्षं तनोतु ॥

नमस्कार—

रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां
ध्वजोर्ध्वरेखांकुश चिह्निताभ्याम् ।
अशेषवृन्दारकवनन्दिताभ्यां
नमो भवानी पद पंकजाभ्याम् ॥

विशेषार्घ्य—

एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवी पूजा
स्वीकृत्यैनां सपदि सकलान् मेपराधान् क्षमस्व ।
न्यूनं यत्तत् तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः
सानन्दं में हृदयकमले तेस्तु नित्यं निवासः ॥

कलशस्थापन—

नवरात्र आदि विशेष काल में भगवती को मन्त्रों द्वारा मंगल कलश में आवाहित कर पूजते हैं। अतः कलशस्थापन की संक्षेप विधि दी जा रही है।

"श्री जगदम्बा प्रीत्यर्थं कलशस्थापनं देवीपूजां च करिष्ये" इस प्रकार संकल्प करके स्वस्ति वचन आदि नित्यपूजा के समस्तपूर्व अंगों सहित गणपति पूजन करे। पश्चात् कलश स्थापन स्थान में भूमि का स्पर्श कर इस मन्त्रों से भूमि को शुद्ध करें।

ॐ भूरसि ·········· (पृ० १३ में देखें)

फिर उस स्थान में शुद्ध मृतिका डालकर यव को इस मन्त्र से बोये—

ॐ धान्य मसि धिनुहिदेवान् प्राणाय त्वोदानाय त्वा व्यानाय त्वा दीर्घामनुप्रसितिमायुषे धान्देवो वः सविता हिरण्यपाणिः प्रतिगृभ्णात्वछिद्रेण पाणिना चक्षुषे त्वा महीनाम्पयोसि ॥

उसके मध्य में कलश रखे—

ॐ आजिघ्र कलशं मह्या त्वाविशंत्विन्दवः। पुनरूर्जानिवर्तस्वसानः सहस्रन्धुक्ष्वोरुधारा-पयस्वती पुनर्मा विशताद्रियः॥

कलश को यह मन्त्र बोलते हुए शुद्ध जल से भरे—

ॐ वरुणस्योत्तंभन ········ (पृ० ११ में देखें)॥

जल के अन्दर निम्न मन्त्रों से चन्दन, सर्वौषधि, दूर्वा, पंचपल्लव, सप्तमृतिका, सुपारी पंचरत्न और सुवर्ण क्रमशः समर्पित करें—

ॐ गन्धद्वारा.........(पृ० २१ में) ॥

ॐ या औषधीः पूर्वा जाता देवेभ्यस्त्रियुगम्परा ।
मनैनुबभ्रूणामह ँ सतन्धामानि सप्त च ॥

ॐ काण्डात्.........(पृ० १५ में) ॥

ॐ अश्वत्थे वोनिषदनम्पर्णो वोवसतिष्कृता । गोमाज इकिलासथयत्सनव थपूरुषम् ॥

ॐ स्योना पृथिवी नोभवानृक्षरानिवेशनी । यच्छानः शर्मसप्रथाः ।

ॐ याः फलानि.........(पृ० २५ में)

ॐ परिवाजपतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् । दधद्रत्नानि दाशुषे ॥

फिर कलश को रक्त वस्त्र से वेष्टित करते हुये यह मन्त्र बोले—

ॐ वसो पवित्रमसि शतधारं वसो पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्त्वासविता पुनातु । वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वा कामधुक्षः ॥

कलश के उपर पूर्णपात्र (या नारियल) रखे—

ॐ पूर्णा दर्वि परापत सुपूर्णा पुनरापत ।
वस्नेव विक्रीणावहा इषमूर्ज ँ शतक्रतो ॥

निम्न मन्त्र से वरुण का आवाहन करके गन्धाक्षत से पूजा करें।

ॐ तत्वायामि ब्रह्मणा वन्दमानस्तदाशास्ते यजमानो हविर्भिः। अहेडमानो वरुणेह बोध्युरुश (ँ) स मान आयुः प्रमोषीः॥

फिर कलश पूजन में दिये 'कलशस्य मुखे.......' आदि मन्त्रों से वरुण की प्रार्थना करें। सम्भव हो तो स्वर्णमय देवी विग्रह या यन्त्र की प्राणप्रतिष्ठा पूर्वक कलश के ऊपर स्थापित करें। फिर उसका या केवल उसी कलश का श्री सूक्त मन्त्रों से (या निर्वाण मन्त्र से या 'जयन्ति मंगला काली'...... मन्त्र से), पूजा करें। कलश में देवी को आवाहित करने के मन्त्र इस प्रकार हैं :—

ॐ आगच्छ वरदे देवि दैत्यदर्प निषूदनि।
पूजां गृहाण सुमुखि नमस्ते शंकरप्रिये॥
सर्व तीर्थमयं वारि सर्व देव समन्वितम्।
इमं घटं समागच्छ तिष्ठदेवगणैः सह॥

दुर्गे देवि समागच्छ सान्निध्यमिह कल्पय।
बलिं पूजां गृहाणत्वमष्टाभिः शक्तिभिः सह॥

अनुष्ठान के अन्तिम दिन पूजानन्तर निम्नांकित मन्त्रों से देवी का विसर्जन होने के बाद किसी जलाशय में घट को प्रवाहित करना चाहिये।

उत्तिष्ठ देवि चण्डेशि शुभां पूजां प्रगृह्य च।
कुरुष्व मम कल्याणमष्टाभिः शक्तिभिः सह॥

दुर्गे देवि जगन्मात स्वस्थानं गच्छ पूजिते ।
सम्वत्सरे व्यतीते तु पुनरा गमनाय वै ॥
इमां पूजां मया देवि यथाशक्त्योपपादिताम् ।
रक्षार्थं त्वं समादाय व्रज स्वस्थानमुत्तमम् ॥

गच्छ गच्छ परं स्थानं स्वस्थानं देवि चण्डिके ।
व्रज स्रोतो जलं वृद्धयै स्थीयतां च जलेत्विह ॥

ॐ नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्चवो नमो नमो व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो विरूपेभ्यो विश्वरूपेभ्यश्च वो नमः ॥

* षडङ्गन्यासाः *

मनो जूतिरिति मन्त्रस्य बृहस्पतिऋषिः बृहस्पतिर्देवता बृहतीच्छन्दः हृदयन्यासे जपे विनियोगः ॥

ॐ मनो ज्जूतिर्ज्जुषतामाज्ज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमन्तनोत्वरिष्टं य्यज्ञᳬ समिमन्दधातु ॥ विश्वे देवास इह मादयन्तामो३ म्प्रतिष्ठ ॥
ॐ हृदयाय नमः ॥१॥

अबोद्ध्यग्निरिति मन्त्रस्य बुधगविष्ठिरा ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः शिरोन्यासे जपे विनियोगः ॥

ॐ अबो'द्ध्य_ग्निः समिधा जना'नाम्प्रति'धे नु-मिवायतीमुषासम् ॥ यह्वाऽइवप्प्रवयामुज्जिहा'नाः प्रभानवः सिस्रते नाकमच्छ ॥ ॐ शिरसे स्वाहा ॥२॥

मूर्द्धानमिति मन्त्रस्य भरद्वाज ऋषिः अग्निर्देवता त्रिष्टुप्छन्दः शिखान्यासे जपे विनियोगः ॥

ॐ मूर्द्धानन्दिवोऽ अरतिम्पृथिव्या व्वै'श्वानर-मृतऽ आजातमग्निनम् ॥ कविंᳬ सम्राजमतिथि-ञ्जना'नामासन्ना पात्रञ्जनयन्त देवाः ॥ ॐ शिखायै वषट् ॥३॥

मर्म्माणि त इति मन्त्रस्य अप्रतिरथ ऋषिः मर्म्माणि देवता विराट्छन्दः कवचन्यासे जपे विनियोगः ॥

मर्म्माणि ते व्वर्म्म'णाच्छादयामि सोमस्त्वा राजाऽमृतेनानुवस्ताम् ॥ उरोर्व्वरीयो व्वरुणस्ते

कृणोतु जयन्तन्त्वानुदेवा मदन्तु ॥ ॐ कवचाय हुम् ॥४॥

विश्वतश्चक्षुरिति मन्त्रस्य विश्वकर्मा भौवन ऋषिः विश्वकर्मा देवता त्रिष्टुप्छन्दः नेत्रन्यासे जपे विनियोगः ॥

ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो-बाहुरुत विश्वतस्पात् ॥ सम्बाहुभ्यान्धमति सम्पतत्रैर्द्यावाभूमी जनयन्देव एकः ॥ ॐ नेत्र-त्रयाय वौषट् ॥५॥

मा नस्तोके इति मन्त्रस्य परमेष्ठी ऋषिः एकरुद्रो देवता जगतीछन्दः अस्त्रन्यासे जपे विनियोगः ॥

ॐ मा नस्तोके तनये मा न ऽआयुषि मा नो गोषु मा नो ऽअश्वेषु रीरिषः मा नो व्वीरान्न् रुद्र भामिनो व्वधीर्हविष्मन्तः सदमित्त्वा हवामहे ॥ ॐ अस्त्राय फट् ।६॥

इस प्रकार न्यास करने के उपरान्त शिव पर धाराभिषेक करते हुए पाठ आरम्भ करे:—

ॐ ॥ नमस्ते रुद्द्र मन्न्यवऽउतो तऽइषवे नमः ॥ बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥१॥ या ते रुद्द्र शिवा तनूरघोराऽपापकाशिनी ॥ तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥२॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्रताङ्कुरु मा हिंꣳसीः पुरुषञ्जगत् ॥३॥ शिवेन व्वचसा त्त्वा गिरिशाच्छा व्वदामसि ॥ यथा नः सर्व्वमिज्जगदयक्ष्मꣳ सुमना ऽअसत् ॥४॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्व्यो भिषक् ॥ अहीꣳश्च सर्व्वाञ्जम्भयन्त्सर्व्वाश्च यातुधान्न्योधराचीः परासुव ॥५॥ असौ यस्ताम्म्रो ऽअरुणऽउत बब्भ्रुः सुमङ्गलः ॥ ये चैनꣳ रुद्द्रा ऽअभितो दिक्षुश्रिताः सहस्स्रशोऽवैषाꣳ हेडऽईमहे ॥६॥ असौ यो ऽवसर्पति नीलग्ग्रीवो व्विलोहितः ॥ उतैनङ्गोपा ऽअदृश्रन्नदृश्रन्नुदहार्य्यः

स दृष्टो मृडयाति नः ॥७॥ नमोऽस्तु नीलग्ग्री-
वाय सहस्राक्षाय मीढुषे ॥ अथो ये ऽअस्य
सत्त्वानो ऽहन्तेभ्यो ऽकरन्नमः ॥८॥ प्रमुञ्च धन्न्व-
नस्त्वमुभयोरार्त्न्योर्ज्ज्याम् । याश्च ते हस्त
ऽइषवः परा ता भगवो व्वप ॥९॥ विज्ज्यन्धनुः
कपर्द्दिनो व्विशल्ल्यो बाणवाँ२ ऽउत ॥ अने-
शन्नस्य या ऽइषव ऽआभुरस्य निषङ्गधिः ॥१०॥
या ते हेतिर्म्मीढुष्टम हस्ते बभूव ते धनुः ॥
तयास्म्मान्विश्श्वतस्त्वमयक्ष्मया परिभुज ॥११॥
परि ते धन्न्वनो हेतिरस्म्मान्न्वृणक्तु व्वि-
श्श्वतः ॥ अथो य ऽइषुधिस्तवारे ऽअस्म्मन्नि-
धेहि तम् ॥१२॥ अवतत्त्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष
शतेषुधे ॥ निशीर्य्य शल्ल्यानाम्मुखा शिवो
नः सुमना भव ॥१३॥ नमस्त ऽआयुधायानात-
ताय धृष्ष्णवे ॥ उभाभ्यामुत ते नमो बाहु-
भ्यान्तव धन्न्वने ॥१४॥

मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ ऽअर्भ॒कम्मा न॒ ऽउक्ष॑न्त-मु॒त मा न॑ ऽउक्षि॒तम् ॥ मा नो॑ ऽवधीः पि॒तर॒-म्मोत म॒ातर॒म्मा न॑ः प्रि॒यास्त॒न्वो रुद्र रीरिषः ॥१५॥ मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॒ ऽआयु॑षि॒ मा नो॒ गो॒षु मा नो॒ ऽअश्वे॑षु रीरिषः ॥ मा नो॑ वी॒रा-न्रु॑द्र भा॒मिनो॑ ऽवधीर्ह॒विष्म॑न्तः॒ सद॒मित्त्वा॑ हवामहे ॥१६॥ नमो॒ हिर॑ण्यबाहवे । सेना॒न्ये॒ दि॒शाञ्च॒ पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यः पशू॒नाम्पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ श॒ष्पिञ्ज॑राय॒ त्त्विषी॑मते पथी॒नाम्पत॑ये॒ नमो॒ नमो॒ हरि॑केशायोपवी॒तिने॑ पुष्टा॒नाम्पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ बभ्लु॒शाय॑ ॥१७॥ नमो॑ बभ्लु॒शाय॑ । व्या॒धिनेऽन्ना॒नाम्पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ भ॒वस्य॑ हे॒त्यै जग॑ता॒म्पत॑ये॒ नमो॒ नमो॑ रु॒द्राया॑तता॒यिने॒ क्षेत्रा॑णा॒म्पत॑ये॒ नमो॒ नमः॑ सू॒तायाह॑न्त्यै॒ वना॑ना॒म्पत॑ये॒ नमो॒ नमो॒ रोहि॑-

ताय ॥१८॥ नमो रोहिताय स्थपतये वृक्षाणा-
म्पतये नमो नमो भुवन्तये वारिवस्कृतायौष-
धीनाम्पतये नमो नमो मन्त्रिणे वाणिजाय
कक्षाणाम्पतये नमो नम उच्चैर्घोषायाक्रन्द-
यते पत्तीनाम्पतये नमो नमः कृत्स्नायतया
॥१९॥ नमः कृत्स्नायतया धावते सत्त्वनाम्पतये
नमो नमः सहमानाय निव्याधिन आव्याधि-
नीनाम्पतये नमो नमो निषङ्गिणे ककुभाय
स्तेनानाम्पतये नमो नमो निचेरवे परिचराया-
रण्यानाम्पतये नमो नमो वञ्चते ॥२०॥

नमो वञ्चते परिवञ्चते स्तायूना-
म्पतये नमो नमो निषङ्गिण इषुधिमते तस्क-
राणाम्पतये नमो नमः सृकायिभ्यो जिघांस-
द्भ्यो मुष्णताम्पतये नमो नमोऽसिमद्भ्यो
नक्तञ्चरद्भ्यो विकृन्तानाम्पतये नमः ॥२१॥

नम ऽउष्णीषिणे ॥ गिरिचराय कुलुञ्चानाम्पतये
नमो नम ऽइषुमद्भ्यो धन्वायिभ्यश्च वो
नमो नम ऽआतन्वानेभ्यः प्रतिदधानेभ्यश्च
वो नमो नम ऽआयच्छद्भ्योऽस्यद्भ्यश्च वो नमो
नमो विसृजद्भ्यः ॥२२॥ नमो विसृजद्भ्यो विद्-
ध्यद्भ्यश्च वो नमो नमः स्वपद्भ्यो जाग्रद्भ्यश्च
वो नमो नमः शयानेभ्य ऽआसीनेभ्यश्च वो
नमो नमस्तिष्ठद्भ्यो धावद्भ्यश्च वो नमो
नमः सभाभ्यः ॥२३॥ नमः सभाभ्यः सभा-
पतिभ्यश्च वो नमो नमोऽश्वेभ्योऽश्वपतिभ्य-
श्च वो नमो नम ऽआव्याधिनीभ्यो विवि-
ध्यन्तीभ्यश्च वो नमो नम ऽउगणाभ्यस्तृꣳ-
हतीभ्यश्च वो नमो नमो गणेभ्यः ॥२४॥
नमो गणेभ्यो गणपतिभ्यश्च वो नमो नमो
व्रातेभ्यो व्रातपतिभ्यश्च वो नमो नमो

गृत्सेभ्यो गृत्सपतिभ्यश्च वो नमो नमो
व्विरूपेभ्यो व्विश्श्वरूपेभ्यो व्विश्श्वरूपेभ्यश्च
वो नमो नमः सेनाभ्यः ॥२५॥ नमः सेना-
भ्यः । सेनानिभ्यश्च वो नमो नमो रथिभ्यो-
ऽअरथेभ्यश्च वो नमो नमः क्षत्तृभ्यः सङ्ग्र-
हीतृभ्यश्च वो नमो नमो महद्भ्योऽअर्भ-
केभ्यश्च वो नमः ॥२६॥ नमस्तक्षभ्यो ।
रथकारेभ्यश्च वो नमो नमः कुलालेभ्यः
कर्म्मारेभ्यश्च वो नमो नमो निषादेभ्यः
पुञ्जिष्टेभ्यश्च वो नमो नमः श्वनिभ्यो
मृगयुभ्यश्च वो नमो नमः श्वभ्यः ॥२७॥
नमः श्वभ्यः । श्वपतिभ्यश्च वो नमो नमो
भवाय च रुद्द्राय च नमः शर्वाय च पशुपतये
च नमो नीलग्ग्रीवाय च शितिकण्ठाय च नमः
कपर्द्दिने ॥२८॥ नमः कपर्द्दिने । च व्युप्तकेशाय

च नमः सहस्राक्षाय च शतधन्न्वने च नमो गिरि-
शयाय च शिपिविष्टाय च नमो मीढुष्टमाय
चेषुमते च नमो ह्रस्वाय ॥२९॥ नमो ह्रस्वाय च
वामनाय च नमो बृहते च वर्षीयसे च नमो
वृद्धाय च सवृधे च नमोऽग्र्याय च प्रथमाय च नम
ऽआशवे ॥३०॥ नम ऽआशवे चाजिराय च नमः
शीग्घ्र्याय च शीभ्याय च नम ऽऊर्म्याय चावस्व-
न्न्याय च नमो नादेयाय च द्वीप्याय च ॥३१॥
नमो ज्येष्ठाय च कनिष्ठाय च नमः पूर्व्वजाय
चापरजाय च नमो मद्ध्यमाय चापगल्भाय च
नमो जघन्न्याय च बुध्न्याय च नमः सोभ्याय
॥३२॥ नमः सोभ्याय च प्रतिसर्य्याय च
नमो याम्म्याय च क्षेम्म्याय च नमः श्लोक्याय
चावसान्न्याय च नम ऽउर्व्वर्य्याय च खल्ल्याय
च नमो वन्न्याय ॥३३॥ नमो वन्न्याय च

कक्ष्या'य च नम÷ श्रवाय च प्रतिश्रवाय' च
नम ऽआशुषे'णाय चाशुरथाय च नमः शूरा'य
चावभेदिने' च नमो' बिल्मिने' ॥३४॥ नमो'
बिल्मिने' । च कवचिने' च नमो' व्वर्म्मिणे' च
व्वरूथिने' च नम÷ श्श्रुताय च श्श्रुतसेनाय च
नमो' दुन्दुब्भ्याय चाहनन्न्याय च नमो' धृष्णवे'
॥३५॥ नमो' धृष्णवे' । च प्रमृशाय च नमो'
निषङ्गिणे' चेषुधिमते' च नमस्तीक्ष्णेषवे चायु-
धिने' च नम÷ स्वायुधाय च सुधन्न्वने च
॥३६॥ नमः स्रुत्या'य । च पत्थ्या'य च नमः
काट्या'य च नीप्प्या'य च नमः कुल्या'य च
सरस्याय च नमो' नादेयाय च वैशन्ताय च
नम'ः कूप्प्या'य ॥३७॥ नमःकूप्प्या'य । चावट्याय
च नमो व्वीद्ध्रया'य चातप्प्याय च नमो मेग्ध्या'य
च व्विद्युत्याय च नमो व्वर्ष्या'य चावर्ष्या'य च
नमो व्वात्या'य ॥३८॥ नमो व्वात्या'य । च

रेष्म्या॑य च॒ नमो॑ व्वास्त॒व्या॑य च वास्तु॒पाय॑ च॒ नमः॒ सोमा॑य च रु॒द्राय॑ च॒ नम॑स्ता॒म्राय॑ चारु॒णाय॑ च॒ नमः॑ शङ्गवे॑ ॥३९॥ नमः॑ श॒ङ्गवे॑ । च पशु॒पत॑ये च॒ नम॑ऽउ॒ग्राय॑ च भी॒माय॑ च॒ नमो॑-ग्रेव॒धाय॑ च दूरेव॒धाय॑ च॒ नमो॑ ह॒न्त्रे च॒ हनी॑यसे च॒ नमो॑ व्वृ॒क्षेभ्यो॒ हरि॑केशेभ्यो॒ नम॑स्ता॒राय॑ ॥४०॥ नमः॑ शम्भ॒वाय॑ । च मयोभ॒वाय॑ च॒ नमः॑ शङ्क॒राय॑ च मयस्क॒राय॑ च॒ नमः॑ शि॒वाय॑ च शि॒वत॑राय च ॥४१॥ नमः॒ पार्य्या॑य चावा॒र्य्या॑य च॒ नमः॑ प्र॒तर॑णाय चो॒त्तर॑णाय च॒ नम॒स्तीर्त्थ्या॑-य च॒ कूल्या॑य च॒ नमः॒ शष्प्या॑य च॒ फेन्या॑य च॒ नमः॑ सिक॒त्या॑य ॥ ४२ ॥ नमः॑ सिक॒त्या॑य । च प्रवा॒ह्या॑य च॒ नमः॑ किꣳशि॒लाय॑ च क्षय॒णा-य॑ च॒ नमः॑ कप॒र्दिने॑ च पुल॒स्तये॑ च॒ नम॑ऽइरि॒-ण्या॑य च प्रप॒थ्या॑य च॒ नमो॒ व्व्रज्या॑य ॥४३॥ नमो॒ व्व्रज्या॑य । च गोष्ठ्या॑य च॒ नम॒स्तल्-

ल्प्याय च गेह्याय च नमो हृदय्याय च निवेष्याय च नमः काट्याय च गह्वरेष्ठाय च नमः शुष्क्याय ॥ ४४ ॥ नमः शुष्क्याय । च हरित्याय च नमः पांसव्याय च रजस्याय च नमो लोप्याय चोलप्याय च नमऽऊर्व्याय च सूर्व्याय च नमः पर्णाय ॥४५॥ नमः पर्णाय । च पर्णशदाय च नमऽउद्गुरमाणाय चाभिघ्नते च नमऽआखिदते च प्रखिदते च नमऽइषुकृद्भ्यो धनुष्कृद्भ्यश्च वो नमो नमो वः किरिकेभ्यो देवानांहृदयेभ्यो नमो विचिन्वत्केभ्यो नमो विक्षिणत्केभ्यो नमऽआनिर्हतेभ्यः । ४६॥ द्रापेऽअन्धसस्पते दरिद्र नीललोहित ॥ आसाम्प्रजानामेषाम्पशूनाम्मा भेर्म्मारोङ्मो च नः किञ्चनाममत् ॥४७॥ इमा रुद्राय । तवसे कपर्द्दिने क्षयद्वीराय प्रभरामहे मतीः ॥ यथा शमसद्

द्विपदे चतुष्पदे विश्वम्पुष्टङ्ग्रामे ऽअस्मिन्ननातुरम् ॥४८॥ या ते रुद्र शिवा तनूः शिवा विश्वाहा भेषजी ॥ शिवा रुतस्य भेषजी तया नो मृड जीवसे ॥४९॥ परि नो रुद्रस्य हेतिर्वृणक्तु परि त्वेषस्य दुर्म्मतिरघायोः ॥ अव स्थिरा मघवद्भ्यस्तनुष्व मीढ्वस्तोकाय तनयाय मृड ॥५०॥ मीढुष्टम शिवतम । शिवो नः सुमना भव ॥ परमे वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्तिं वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥५१॥ विकिरिद्र विलोहित । नमस्ते ऽअस्तु भगवः ॥ यास्ते सहस्रꣳ हेतयोन्न्यमस्मन्निवपन्तु ताः ॥५२॥ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः ॥ तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥५३॥ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधिभूम्याम् । तेषाꣳ सहस्रयोजनेवधन्वानि तन्मसि ॥५४।

अस्मिन्न्महत्त्यर्णवेन्तरिक्षे भवा ऽअधि ॥
तेषाꣳसहस्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि ॥५५॥
नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठा दिवꣳ रुद्द्रा ऽउप-
श्रिताः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्न्वानि
तन्न्मसि ॥५६॥ नीलग्ग्रीवाः शितिकण्ठाः
शर्व्वा ऽअधः क्षमाचराः ॥ तेषाꣳसहस्रयोजनेव
धन्न्वानि तन्न्मसि ॥५७॥ ये व्वृक्षेषु शष्पिञ्जरा
नीलग्ग्रीवा व्विलोहिताः ॥ तेषाꣳ सहस्रयोज-
नेव धन्न्वानि तन्न्मसि ॥५८॥ ये भूतानामधि-
पतयो व्विशिखासः कपर्द्दिनः ॥ तेषाꣳ
सहस्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि ॥५९॥ ये पथा-
म्पाथिरक्षय ऽऐलबृदा ऽआयुर्य्युधः ॥ तेषाꣳ
सहस्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि ॥६०॥ ये ती-
र्त्थानि । प्रचरन्न्ति सृकाहस्ता निषङ्गिणः ॥
तेषाꣳ सहस्रयोजनेव धन्न्वानि तन्न्मसि ॥६१॥

येन्ने॑षु । व्विविद्ध्य॑न्ति पात्त्रे॑षु पिब॑तो जना॑न् ॥ तेषा॑ᳬ सहस्र योजनेव धन्न्वा॑नि तन्न्मसि ॥६२॥ य ऽएताव॑न्तश्च भूया॑ᳬसश्च दिशो॑ रुद्द्रा व्वि॑तास्त्थिरे ॥ तेषा॑ᳬ सहस्रयोजनेव धन्न्वा॑नि तन्न्मसि ॥६३॥ नमो॑स्तु । रुद्द्रेब्भ्यो ये दिवि येषां॑ व्वर्षमिषव॑ः ॥ तेब्भ्यो दश प्प्राचीर्दश॑ दक्षिणा दश॑ प्प्रतीचीर्दशोदी॑चीर्दशोर्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्यो नमो॑ ऽअस्तु ते नो॑वन्तु ते नो॑ मृड-यन्तु ते यान्द्विष्ष्मो यश्च॑ नो द्द्वेष्टि तमे॑षा-ञ्जम्भे॑ दद्ध्मः ॥६४॥ नमो॑स्तु रुद्द्रेब्भ्यो येन्त-रिक्षे येषांव्वात ऽइषवः । तेब्भ्यो दश प्प्राचो-र्दश॑ दक्षिणा दश॑ प्प्रतीचीर्दशोदी॑चीर्दशो-र्द्ध्वाः ॥ तेब्भ्यो नमो॑ ऽअस्तु ते नोऽवन्तु ते नो॑ मृडयन्तु ते यन्द्विष्ष्मो यश्च॑ नो द्द्वेष्टि तमे॑षाञ्जम्भे॑ दद्ध्मः ॥६५॥ नमो॑स्तु । रुद्द्रेब्भ्यो

ये पृथिव्यां येषामन्नमिषवः । तेभ्यो दश प्राचीर्दश दक्षिणा दश प्रतीचीर्दशोदीचीर्दशोर्ध्वाः । तेभ्यो नमो अस्तु ते नोऽवन्तु ते नो मृडयन्तु ते यन्द्विष्मो यश्च नो द्वेष्टि तमेषां जम्भे दध्मः ॥६६॥ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः ॥ बाहुभ्यामुत ते नमः ॥६७॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ॥ तया नस्तन्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥६८॥ यामिषुङ्गिरिशन्त हस्ते बिभर्ष्यस्तवे ॥ शिवाङ्गिरित्र ताङ्कुरु मा हिंसीः पुरुषञ्जगत् ॥६९॥ शिवेन वचसा त्वा गिरिशाच्छा वदामसि ॥ यथा नः सर्वमिज्जगदयक्ष्मं सुमना असत् ॥७०॥ अध्यवोचदधिवक्ता प्रथमो दैव्यो भिषक् ॥ अहींश्च सर्वाञ्जम्भयन्त्सर्वाश्च यातुधान्योऽधराचीः

परा॑सुव ॥७१॥ असौ यस्ता॒म्रो ऽअ॑रु॒ण ऽउ॒त ब॒भ्रुः सु॑म॒ङ्गलः॑ ॥ ये चै॑नꣳ रु॒द्रा ऽअ॒भितो॑ दि॒क्षु श्रि॒ताः स॑हस्र॒शोवै॑षा॒ꣳ हेड॑ ऽईमहे ॥७२॥ असौ यो॑ऽव॒सर्प॑ति नील॑ग्रीवो॒ विलो॑हितः ॥ उ॒तैनं॑ गो॒पा ऽअ॑दृश्र॒न्नदृ॑श्रन्नुदहा॒र्य्यः॑ स दृ॒ष्टो मृ॑डयाति नः ॥७३॥ नमो॑ऽस्तु॒ नील॑ग्रीवाय सहस्रा॒क्षाय॑ मी॒ढुषे॑ ॥ अथो॒ ये ऽअ॑स्य॒ सत्वा॑नो॒-ऽहं तेभ्यो॑ऽकर॒न्नमः॑ ॥७४॥ प्रमु॑ञ्च॒ धन्व॑न॒स्त्व-मु॒भयो॒रार्त्न्यो॒र्ज्याम् ॥ याश्च॑ ते॒ हस्त॒ ऽइष॑वः॒ परा॒ ता भ॑गवो॒ वप ॥७५॥ विज्ज्य॒न्धनुः॑ कप॒र्द्दिनो॒ विश॑ल्यो॒ बाण॑वाँ२॥ ऽउ॒त ॥ अने॑शन्नस्य॒ या ऽइष॑व ऽआ॒भुर॑स्य निष॒ङ्गधिः॑ ॥७६॥ या ते॑ हे॒तिर्मी॑ढुष्टम॒ हस्ते॑ ब॒भूव॑ ते॒ धनुः॑ ॥ तया॒-स्मान्वि॒श्वत॒स्त्वम॑य॒क्ष्मया॒ परि॑ भुज ॥७७॥ परि॑ ते॒ धन्व॑नो हे॒तिर॒स्मान्वृ॑णक्तु वि॒-

श्श्वतः ॥ अथो य ऽइषु॑धिस्तवारे ऽअस्मन्नि-धे॑हि तम् ॥७८॥ अवतत्य धनुष्ट्वꣳ सहस्राक्ष शते॑षुधे ॥ निशीर्य्य॑ श॒ल्ल्याना॒म्मुखा॑ शि॒वो नः॑ सुमना॑ भव ॥७९॥ नम॑स्त ऽआयुधायाना॑त-ताय धृष्णवे॑ ॥ उभाब्भ्या॑मु॒त ते॒ नमो॑ बाहु-ब्भ्या॒न्तव॒ धन्व॑ने ॥८०॥ मा नो॑ म॒हान्त॑मु॒त मा नो॑ ऽअर्भ॒कम्मा न॒ ऽउक्ष॑न्तमु॒त मा न॑ ऽउक्षि॒तम् ॥ मा नो॑ व्वधीः पि॒तर॒म्मोत मा॒तर॒म्मा नः॑ प्प्रि॒यास्त॒न्न्वो॑ रुद्द्ररीरिषः ॥८१॥ मा न॑स्तो॒के तन॑ये॒ मा न॒ ऽआयु॑षि॒ मा नो॒ गोषु॒ मा नो॒ ऽअश्श्वे॑षु रीरिषः ॥ मा नो॑ व्वी॒रान्न्॑ द्द्र भा॒मिनो॑ व्वधीर्ह॒विष्म॑न्तः सद॒मित्त्वा॑ हवामहे ॥८२॥ ए॒ष ते॑ रुद्द्र भा॒गः स॒ह स्वस्राम्बिक॒या तञ्जु॑षस्व॒ स्वाहै॒ष ते॑ रुद्द्र भा॒ग ऽआ॒खुस्ते॑ प॒शुः ॥८३॥ अव॑ रु॒द्रम॑दीम॒ह्यव॑ दे॒वन्त्र्यम्बकम् ॥

यथा नो व्वस्यसस्करद्यथा नः श्रेयसस्करद्यथा नो व्व्यवसाययात ॥८४॥ नमस्ते रुद्र मन्न्यव ऽउतो त ऽइषवे नमः ॥ बाहुब्भ्यामुत ते नमः ॥८५॥ या ते रुद्र शिवा तनूरघोरापापकाशिनी ॥ तया नस्तन्न्वा शन्तमया गिरिशन्ताभिचाकशीहि ॥८६॥ न तं व्विदाथ य इमा जजानान्यद्युष्माकमन्तरं बभूव । नीहारेण प्रावृता जल्प्या चासुतृप ऽउक्थशासश्चरन्ति ॥८७॥ विश्वकर्म्मा ह्यजनिष्ट देव आदिद्गन्धर्वो ऽअभवद्द्वितीयः तृतीयः । पिता जनितौषधीनामपाङ्गर्भं व्यदधात् पुरुत्रा ॥८८॥ मीढुष्टम शिवतम । शिवो नः सुमना भव ॥ परमे व्वृक्ष ऽआयुधन्निधाय कृत्तिं व्वसान ऽआचर पिनाकम्बिभ्रदागहि ॥८९॥ व्विकिरिद्र व्विलोहित । नमस्ते ऽअस्तु भगवः ॥ यास्ते सहस्रं

हेतयोऽन्यमस्मन्निवपन्तु ताः ॥६०॥ सहस्राणि सहस्रशो बाह्वोस्तव हेतयः । तासामीशानो भगवः पराचीना मुखा कृधि ॥६१॥ असंख्याता सहस्राणि ये रुद्रा ऽअधिभूम्याम् ॥ तेषाᳬं सहस्रयोजनेव धन्वानि तन्मसि ॥६२॥ व्वयᳬं सोम व्व्रते तव मनस्तनूषु बिभ्रतः ॥ प्रजावन्तः सचेमहि ॥६३॥ एष ते रुद्र भागः सह स्वस्राम्बिकया तञ्जुषस्व स्वाहैष ते रुद्रभाग ऽआखुस्ते पशुः ॥६४॥ अव रुद्र मदीमह्यव देवन्त्र्यम्बकम् । यथा नो व्वस्यसस्करद्यथा नः श्श्रेयसस्करद्यथा नो व्व्यवसाययात् ॥६५॥ भेषजमसि भेषजङ्गवेऽश्वाय पुरुषाय भेषजम् ॥ सुखम्मेषाय मेष्ष्यै ॥६६॥ त्र्यम्बकं य्यजामहे । सुगन्धिम्पुष्टिवर्द्धनम् । उर्व्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्म्मुक्षीय मामृतात् ॥ त्र्यम्बकं य्यजामहे

सुगन्धिम्पतिवेदनम् ॥ उर्व्वारुकमिव बन्धनादितो मुक्षीय मामुतः ॥९७॥ एतत्ते । रुद्रावसन्तेन परो मूजवतोतीहि ॥ अवततधन्न्वा पिनाकावसः कृत्तिवासा ऽअहिꣳसन्नः शिवोतीहि ॥९८॥ त्र्यायुषञ्जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम् । यद्देवेषु त्र्यायुषन्तन्नो ऽअस्तु त्र्यायुषम् ॥९९॥ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्याय प्प्रजननाय रायस्प्पोषाय सुप्प्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥१००॥

इति शतरुद्रियम् ।

॥ अथ शान्त्यध्यायः ॥

ॐ । ऋचं व्वाचम्प्रपद्ये मनो यजुः प्प्रपद्ये साम प्प्राणम्प्रपद्ये चक्षुः श्श्रोत्रम्प्रपद्ये ॥ व्वागोजः सहौजो मयि प्प्राणापानौ ॥१॥ यन्मे

छिद्रञ्चक्षुषो हृदयस्य मनसो व्वातितृणण्ण्बृहस्पतिर्म्मे तद्दधातु ॥ शन्नो भवतु भुवनस्य यस्पतिः ॥२॥ भूर्भुवः स्वः । तत्सवितुर्वरेण्यम्भर्गो देवस्य धीमहि ॥ धियो यो नः प्रचोदयात् ॥३॥ कया नश्चित्र ऽआभुवदूती सदावृधः सखा ॥ कया शचिष्ठया व्वृता ॥४॥ कस्त्वा । सत्यो मदानाम्मंहिष्ठो मत्सदन्धसः ॥ दृढा चिदारुजे व्वसु ॥५। अभी षु णः। सखीनामविता जरितॄणाम् । शतम्भवास्यूतिभिः ॥६॥ कया त्वन्न ऽऊत्याभि प्रमन्दसे व्वृषन् । कया स्तोतृभ्य ऽआभर ॥७॥ इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥ शन्नो ऽअस्तु द्विपदे शञ्चतुष्पदे ॥८॥ शन्नो मित्रः शं व्वरुणः शन्नो भवत्वर्य्यमा ॥ शन्न ऽइन्द्रो बृहस्पतिः शन्नो विष्णुरुरुक्रमः ॥९॥ शन्नो व्वातः ॥ पवताꣳ शन्न-

स्तपतु सूर्य्यः ॥ शन्नः कनिक्रदद्देवः पर्ज्जन्यो ऽअभिवर्षतु ॥१०॥ अहानि शम्भवन्तु नः शꣳ रात्रीः प्रतिधीयताम् । शन्न ऽइन्द्राग्नी भवतामवोभिः शन्न ऽइन्द्रावरुणा रातहव्या ॥ शन्न ऽइन्द्रापूषणा व्वाजसातौ शमिन्द्रासोमा सुविताय शं य्योः ॥११॥ शन्नो देवीरभिष्टय ऽआपो भवन्तु पीतये ॥ शं य्योरभिस्रवन्तु नः ॥१२॥ स्योना पृथिवि । नो भवान्नृक्षरा निवेशनी ॥ यच्छा नः शर्म्म सप्रथाः ॥१३॥ आपो हि । ष्ठा मयोभुवस्ता न ऽऊर्जे दधातन ॥ महेरणाय चक्षसे ॥१४॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः ॥ उशतीरिव मातरः ॥१५॥ तस्मा ऽअरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ ॥ आपो जनयथा च नः ॥१६॥ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः

पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वंः शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१७॥ दृते दृंह मा मित्रस्य मा चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षन्ताम् ॥ मित्रस्याहं चक्षुषा सर्वाणि भूतानि समीक्षे ॥ मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे ॥१८॥ दृते दृंह मा । ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासं ज्योक्ते सन्दृशि जीव्यासम् ॥१९॥ नमस्ते हरसे शोचिषे नमस्ते ऽअस्त्वर्चिषे ॥ अन्याँस्ते ऽअस्मत्तपन्तु हेतयः पावको ऽअस्मभ्यंः शिवो भव ॥२०॥ नमस्ते ऽअस्तु विद्युते नमस्ते स्तनयित्नवे ॥ नमस्ते भगवन्नस्तु यतः स्वः समीहसे ॥२१॥ यतो यतः समीहसे ततो नो ऽअभयङ्कुरु ॥ शन्नः कुरु प्रजाभ्योभयन्नः पशुभ्यः

॥२२॥ सुमित्रियान ऽआप ऽओषधयः सन्तु दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योस्मान्द्वेष्टि यञ्च व्वयन्द्विष्मः ॥२३॥ तच्चक्षुर्द्देवहितम्पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत् ॥ पश्येम शरदः शतञ्जीवेम शरदः शतं शृणुयाम शरदः शतम्प्रब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतम्भूयश्च शरदः शतात् ॥२४॥

इति रुद्रे शान्त्यध्यायः ॥६॥

अथ रुद्रे स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः ॥

ॐ स्वस्ति न ऽइन्द्रो व्वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा व्विश्ववेदाः ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो ऽअरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्द्दधातु ॥१॥ ॐ पयः पृथिव्याम्पय ऽओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयो धाः ॥ पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ॥२॥ ॐ व्विष्णो रराटमसि व्विष्णोः

श्नप्त्रे स्थो व्विष्णोः स्यूरसि व्विष्णो ध्रुवोऽसि ॥ वैष्णवमसि व्विष्णवे त्वा ॥३॥ ॐ अग्निर्देवता व्वातो देवता सूर्य्यो देवता चन्द्रमा देवता व्वसवो देवता रुद्द्रा देवतादित्या देवता मरुतो देवता व्विश्वे देवा देवता बृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता व्वरुणो देवता ॥४॥ ॐ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः॥ भवे भवे नातिभवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥५॥ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥६॥ अघोरेभ्योथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः ॥ सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते ऽअस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥७॥ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय

धीमहि ॥ तन्नो रुद्रः प्रचोदयात ॥८॥ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम् ॥ ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे ऽअस्तु सदाशिवोम् ॥९॥ ॐ शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते ऽअस्तु मा मा हिꣳसीः ॥ निवर्त्तयाम्म्यायुषेन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्य्याय ॥१०॥ ॐ व्विश्वानि देव सवितर्दुरितानि परासुव ॥ यद्भद्रन्तन्न ऽआसुव ॥११॥ ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः ॥ व्वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्व्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥१२॥ ॐ सर्वेषां वा एष व्वेदानाꣳ रसो यत्साम सर्वेषामेवैनमेतद्वेदानाꣳ रसेनाभिषिञ्चति ॥१३॥

॥ इति स्वस्तिप्रार्थनामन्त्राध्यायः ॥

ॐ शान्तिः शान्तिः सुशान्तिर्भवतु । सर्वारिष्टशान्तिर्भवतु ॥ अनेन कृतेन शतरुद्रियाभिषेककर्मणा श्रीभवानीशङ्करमहारुद्रः प्रीयतान्न मम ॥ ॐ सदाशिवार्पणमस्तु ॥इति॥

॥ श्री सूक्तम् ॥

ॐ हिरंण्यवर्णां हरिंणीं सुवर्णरजतस्रंजाम् ॥ चंद्रां हिरण्मंयीं लक्ष्मीं जातंवेदो म आवंह ॥१॥ तां म आवंह जातवेदो लक्ष्मीमनंपगामिनीम् ॥ यस्यां हिरंण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुंषानहम् ॥२॥ अश्वपूर्वां रंथमध्यां हस्तिनांदप्रबोधिंनीम् । श्रियं देवीमुपंह्वये श्रीर्मां देवीजुंषताम् ॥३॥ कांसोस्मितां हिरंण्यप्राकारांमाद्रां ज्वलंन्तीं तृप्तां तर्पयंतीम् । पद्मे स्थितां पद्मवंर्णां तामिहोपंह्वये श्रियंम् ॥४॥ चंद्रां प्रंभासां यशसा ज्वलंतीं श्रियं लोके देवजुंष्टामुदाराम् ।

तांपद्मनेमींशरणमहं प्रपद्येअलक्ष्मी मे नश्यतांत्वां
वृणोमि ॥५॥ आदित्यवर्णे तपसोधिजातो वन-
स्पतिस्तव वृक्षोथबिल्वः ॥ तस्यफलानितपसानु-
दंतुमायांतरायाश्चबाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥ उपैतु-
मांदेवसखः कीर्तिश्चमणिंनासह ॥ प्रादुर्भूतो
सुराष्ट्रेस्मिन्कीर्तिमृद्धिंददातुमे ॥७॥ क्षुत्पिपासा-
मलाज्येष्ठामलक्ष्मींनाशयाम्यहम् ॥ अभूतिमस-
मृद्धिंचसर्वां निर्णुदमेगृहात् ॥८॥ गंधद्वारां
दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् । ईश्वरीं
सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥ मनसः
काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि । पशूनां रूप-
मन्नस्यमयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥ कर्दमेन
प्रजा भूता मयि सम्भव कर्दम । श्रियं वासयमे
कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥ आपः सृजन्तु
स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे । नि च देवीं

मातरं श्रियं वासयं मे कुले ॥१२॥ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं (सुवर्णां हेम) मालिनीम्। सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥ आर्द्रां यः करिणीं यष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम्। चद्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥ तांम ऽआवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम्। यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्यो ऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ॥१६॥ पद्मानने पद्मऊरू पद्माक्षी पद्मसंभवे तन्मे भजसि पद्माक्षी येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥१७॥ अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने। धनं मेजुषतां देवि सर्वकामांश्चदेहि मे ॥१८॥ पद्मानने पद्म विपद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि विश्वप्रिये विश्वमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मरमयिसन्निधत्स्व ॥१९॥

पुत्रपौत्र धनं धान्यं हस्त्यश्वादि गवे रथं। प्रजानां भवसीमाता आयुष्मन्तं करोतु मे। धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः। धनमिन्द्रो बृहस्पति वरुणं धनमस्तुते ॥२०॥ वैनतेय सोमं पिबसोमं पिबतुवृत्रहा। सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥२१॥ न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभामतिः। भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥२२॥ सरसिजनीलये सरोज हस्ते धवलतरांशूक गन्धमाल्य शोभे। भगवति हरि-वल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥२३॥ विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियां। लक्ष्मीं प्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युत वल्लभां ॥२४॥ महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि। तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२५॥ श्रीवर्चस्व मायुष्य मारोग्य माविधाच्छोभमानं महीयते। धान्यं धनं

पशुं बहुपुत्रलाभं शतसंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२६॥ (पद्मप्रिये पद्मिनि पद्महस्ते पद्मालये पद्मदलायताक्षि। विश्वप्रिये विष्णुमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्मं मयिसन्निधत्स्व ॥२७॥ श्रिये जातश्रिय आनिर्यायश्रियं वयोजनितृभ्योदधातु। श्रियं-वसाना अमृतत्त्वमायन् भजन्ति सद्यः सवीता विदध्यून् ॥२८॥ श्रिय एवैनं तच्छ्रिया मादधाति सन्ततरुमृचा वषट्कृत्यं सन्धत्तं संधीयते प्रजया पशुभिः। य एवं वेद। ॐ महादेव्यैच विद्महे विष्णुपत्न्यै च धीमहि तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥)

सूक्तं पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत्

इतिश्री सूक्तम्।

॥ ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः ॥

श्रीशिव-अष्टोत्तरशतनामावली

१ ॐ शिवाय नमः
२ ॐ महेश्वराय नमः
३ ॐ शंभवे नमः
४ ॐ पिनाकिने नमः
५ ॐ शशिशेखराय नमः
६ ॐ वामदेवाय नमः
७ ॐ विरूपाक्षाय नमः
८ ॐ कपर्दिने नमः
९ ॐ नीललोहिताय नमः
१० ॐ शंकराय नमः
११ ॐ शूलपाणये नमः
१२ ॐ खट्वाङ्गिने नमः
१३ ॐ विष्णुवल्लभाय नमः
१४ ॐ शिपिविष्टाय नमः
१५ ॐ अंबिकानाथाय नमः
१६ ॐ श्रीकंठाय नमः
१७ ॐ भक्तवत्सलाय नमः
१८ ॐ भवाय नमः
१९ ॐ शर्वाय नमः
२० ॐ त्रिलोकेशाय नमः
२१ ॐ शितिकंठाय नमः
२२ ॐ शिवाप्रियाय नमः
२३ ॐ उग्राय नमः
२४ ॐ कपालिने नमः
२५ ॐ कामारये नमः
२६ ॐ अंधकासुरसूदनाय नमः
२७ ॐ गंगाधराय नमः
२८ ॐ ललाटाक्षाय नमः
२९ ॐ कालकालाय नमः
३० ॐ कृपानिधये नमः
३१ ॐ भीमाय नमः
३२ ॐ परशुहस्ताय नमः
३३ ॐ मृगपाणये नमः
३४ ॐ जटाधराय नमः
३५ ॐ कैलासवासिने नमः
३६ ॐ कवचिने नमः
३७ ॐ कठोराय नमः
३८ ॐ त्रिपुरांतकाय नमः
३९ ॐ वृषांकाय नमः
४० ॐ वृषभारूढाय नमः
४१ ॐ भस्मोद्धूलित विग्रहाय नमः
४२ ॐ सामप्रियाय नमः
४३ ॐ स्वरमयाय नमः
४४ ॐ त्रयीमूर्तये नमः
४५ ॐ अनीश्वराय नमः
४६ ॐ सर्वज्ञाय नमः
४७ ॐ परमात्मने नमः
४८ ॐ सोमसूर्याग्नि लोचनाय नमः

४९ ॐ हविषे नमः
५० ॐ यज्ञमयाय नमः
५१ ॐ सोमाय नमः
५२ ॐ पंचवक्त्राय नमः
५३ ॐ सदाशिवाय नमः
५४ ॐ विश्वेश्वराय नमः
५५ ॐ वीरभद्राय नमः
५६ ॐ गणनाथाय नमः
५७ ॐ प्रजापतये नमः
५८ ॐ हिरण्यरेतसे नमः
५९ ॐ दुर्धर्षाय नमः
६० ॐ गिरीशाय नमः
६१ ॐ गिरिशाय नमः
६२ ॐ अनघाय नमः
६३ ॐ भुजंगभूषणाय नमः
६४ ॐ भर्गाय नमः
६५ ॐ गिरिधन्विने नमः
६६ ॐ गिरिप्रियाय नमः
६७ ॐ कृत्तिवाससे नमः
६८ ॐ पुरारातये नमः
७९ ॐ भगवते नमः
७० ॐ प्रमथाधिपाय नमः
७१ ॐ मृत्युंजयाय नमः
७२ ॐ सूक्ष्मतनवे नमः
७३ ॐ जगद्व्यापिने नमः
७४ ॐ जगद् गुरवे नमः
७५ ॐ व्योमकेशाय नमः
७६ ॐ महासेन जनकाय नमः
७७ ॐ चारुविक्रमाय नमः
७८ ॐ रुद्राय नमः
७९ ॐ भूतपतये नमः
८० ॐ स्थाणवे नमः
८१ ॐ अहिर्बुध्न्याय नमः
८२ ॐ दिगंबराय नमः
८३ ॐ अष्टमूर्तये नमः
८४ ॐ अनेकात्मने नमः
८५ ॐ सात्त्विकायनमः
८६ ॐ शुद्धविग्रहाय नमः
८७ ॐ शाश्वताय नमः
८८ ॐ खंडपरशवे नमः
८९ ॐ अजाय नमः
९० ॐ पाशविमोचनाय नमः
९१ ॐ मृडाय नमः
९२ ॐ पशुपतये ममः
९३ ॐ देवाय नमः
९४ ॐ महादेवाय नमः
९५ ॐ अव्ययाय नमः
९६ ॐ हरये नमः
९७ ॐ पूषदंतभिदे नमः
९८ ॐ अव्यग्राय नमः
९९ ॐ दक्षाध्वरहराय नमः
१०० ॐ हराय नमः

१०१ ॐ भगनेत्रभिदे नमः
१०२ ॐ अव्यक्तायन नमः
१०३ ॐ सहस्राक्षाय नमः
१०४ ॐ सहस्रपदे नमः
१०५ ॐ अपवर्गप्रदाय नमः
१०६ ॐ अनंताय नमः
१०७ ॐ तारकाय नमः
१०८ ॐ परमेश्वराय नमः

अथ श्री ललिताष्टोत्तरशतनामावली

१ ॐ रजताचलशृंङ्गाग्रमध्यस्थायै नमः
२ ॐ हिमाचलमहावंशपावनायै नमः
३ ॐ शंकरार्धांगसौन्दर्यशरीरायै नमः
४ ॐ लसन्मरकतस्वच्छविग्रहायै नमः
५ ॐ महातिशयसौन्दर्यलावण्यायै ,,
६ ॐ शशांकशेखरप्राणवल्लभायै ,,
७ ॐ सदापंचदशात्मैक्यस्वरूपायै ,,
८ ॐ वज्रमाणिक्यकटककिरीटायै ,,
९ ॐ कस्तूरीतिलकोल्लासिनिटलायै ,,
१० ॐ भस्मरेखांकितलसन्मस्तकायै ,,
११ ॐ विकचाम्भोरुहदलोचनायै ,,
१२ ॐ शरच्चाम्पेयपुष्पाभनासिकायै ,,
१३ ॐ लसत्कांचनताटंकयुगयै ,,
१४ ॐ मणिदर्पणसंकाशकपोलायै ,,
१५ ॐ ताम्बूलपूरितस्मेरवदनायै ,,
१६ ॐ सुपक्वदाडिमीबीजरदनायै ,,
१७ ॐ कम्बुपूगसमच्छायकंधरायै ,,
१८ ॐ स्थूलमुक्ताफलोदारसुहारायै ,,
१९ ॐ गिरीशबद्धमांगल्यमंगल्यै ,,
२० ॐ पद्मपाशांकुशलसत्कराब्जायै ,,
२१ ॐ पद्मकैरवमन्दारसुमालिन्यै नमः
२२ ॐ सुवर्णकुम्भयुग्माभसुकुचायै ,,
२३ ॐ रमणीयचतुर्बाहुसंयुक्तायै ,,
२४ ॐ कनकांगदकेयूरभूषितायै ,,
२५ ॐ बृहत्सौवर्णसौन्दर्यवसनायै ,,
२६ ॐ बृहन्नितम्बविलसज्जघनायै ,,
२७ ॐ सौभाग्यजातशृंगारमध्यमायै ,,
२८ ॐ दिव्यभूषणसन्दोहरञ्जितायै ,,
२९ ॐ पारिजातगुणाधिक्यपदाब्जायै ,,
३० ॐ सुपद्मरागसङ्काशचरणायै ,,
३१ ॐ कामकोटिमहापद्मपीठस्थायै ,,
३२ ॐ श्रीकण्ठनेत्रकुमुदचन्द्रिकायै ,,
३३ ॐ सचामररमावाणीविजितायै ,,
३४ ॐ भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै ,,
३५ ॐ भूतेशालिङ्गनोद्भूतपुलकाङ्ग्यै
३६ ॐ अनङ्गजनकापाङ्गवीक्षणायै ,,
३७ ॐ ब्रह्मोपेन्द्रशिरोरत्नरंजितायै ,,
३८ ॐ शचीमुख्यामरवधूसेवितायै ,,

३९ ॐ लीलाकल्पितब्रह्माण्डमण्डलायै ,,
४० ॐ अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै ,,
४१ ॐ एकातपत्रसाम्राज्यदायिकायै ,,
४२ ॐ सनकादिसमाराध्यपादुकायै नमः
४३ ॐ देवर्षिभिस्स्तूयमानवैभवायै नमः
४४ ॐ कलशोद्भवदुर्वासः पूजितायै नमः
४५ ॐ मत्तेभवक्त्रषड्वक्त्रवत्सलायै नमः
४६ ॐ चक्रराजमहायन्त्रमध्यवर्तिन्यै नमः
४७ ॐ चिदग्निकुण्डसम्भूतसुदेहायै नमः
४८ ॐ शशाङ्कखण्डसम्भूतसुदेहायै नमः
४९ ॐ मत्तहंसवधूमन्दगमनायै नमः
५० ॐ वन्दारुजनसन्दोहवन्दितायै नमः
५१ ॐ अन्तर्मुखजनानन्दफलदायै नमः
५२ ॐ पतिव्रताङ्गनाभीष्टफलदायै नमः
५३ ॐ अव्याजकरुणापूरपूरितायै नमः
५४ ॐ नितान्तसच्चिदानन्दसंयुक्तायै नमः
५५ ॐ सहस्रसूर्यसंयुक्तप्रकाशायै नमः
५६ ॐ रत्नचिन्तामणिगृहमध्यस्थायै ,,
५७ ॐ हानिवृद्धिगुणाधिक्यरहितायै ,,
५८ ॐ महापद्माटवीमध्यनिवासायै ,,
५९ ॐ जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तीनांसाक्षिभूत्यै ,,
६० ॐ महापापौघपापानांविनाशिन्यै नमः
६१ ॐ दुष्टाभीतिमहाभीतिभंजनायै नमः
६२ ॐ समस्तदेवदनुजप्रेरकायै नमः
६३ ॐ समस्तहृदयाम्भोजनिलयायै नमः
६४ ॐ ४अनाहतमहापद्ममन्दिरायै नमः

६५ ॐ सहस्रारसरोजातवासितायै नमः
६६ ॐ पुनरावृत्तिरहितपुरस्थायै नमः
६७ ॐ वाणीगायत्रीसन्नुतायै नमः
६८ ॐ रमाभूमिसुताराध्यपदाब्जायै ,,
६९ ॐ लोपामुद्रार्चितश्रीमच्चरणायै नम
७० ॐ सहस्ररतिसौन्दर्यशरीरायै नमः
७१ ॐ भावनामात्रसन्तुष्टहृदयायै नमः
७२ ॐ सत्यसम्पूर्णविज्ञानसिद्धिदायै नमः
७३ ॐ श्रीलोचनकृतोल्लासफलदायै नमः
७४ ॐ श्रीसुधाब्धिमणिद्वीपमध्यगायै नमः
७५ ॐ दक्षाध्वरविनिर्भेदसाधनायै नमः
७६ ॐ श्रीनाथसोदरीभूतशोभितायै नमः
७७ ॐ चन्द्रशेखरभक्तार्तिभंजनायै नमः
७८ ॐ सर्वोपाधिविनिर्मुक्तचैतन्यायै नमः
७९ ॐ नामपारायणाभीष्टफलदायै नमः
८० ॐ सृष्टिस्थितितिरोधानसङ्कल्पायै ,,
८१ ॐ श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रमध्यगायै ,,
८२ ॐ अनाद्यन्तस्वयम्भूतदिव्यमूर्त्यै ,,
८३ ॐ भक्तहंसपरीमुख्यवियोगायै नमः
८४ ॐ मातृमण्डलसंयुक्तललितायै नमः
८५ ॐ भण्डदैत्यमहासत्त्वनाशनायै नमः
८६ ॐ क्रूरभण्डशिरश्छेदनिपुणायै नमः
८७ ॐ धात्रच्युतसुराधीशसुखदायै नमः
८८ ॐ चण्डमुण्डनिशुम्भादिखण्डनायै ,,
८९ ॐ रक्ताक्तरक्तजिह्वादिशिक्षणायै ,,
९० ॐ महिषासुरदोर्वीर्यनिग्रहायै ,,

९१ ॐ अभ्रकेशमहोत्साहकारणायै ,,
९२ ॐ महेशयुक्तनटनतत्परायै नमः
९३ ॐनिजभर्तृमुखाम्भोजचिन्तनायै,,
९४ ॐ वृषभध्वजविज्ञानभावनायै ,,
९५ ॐ जन्ममृत्युजरारोगभंजनायै ,,
९६ ॐ विधेयमुक्तविज्ञानसिद्धिदायै ,,
९७ ॐ कामक्रोजादिषड्वर्गनाशनायै,,
९८ ॐ राजराजार्चितपदसरोजायै ,,
९९ ॐ सर्ववेदान्तसंसिद्धसुतत्त्वायै ,,
१०० ॐश्रीवीरभक्तविज्ञाननिधनायै ,,
१०१ ॐ अशेषदुष्टदनुजसूदनायै नमः
१०२ ,,साक्षाच्छ्रीदक्षिणामूर्तिमनोज्ञायै ,,
१०३ ॐ हयमेधाग्रसम्पूज्यमहिमायै ,,
१०४ ॐदक्षप्रजापतिसुतवेषाढ्यायै ,,
१०५ॐकुसुमबाणेक्षुकोदण्डमण्डितायै
१०६ ॐनित्ययौवनमाङ्गल्यमङ्गलायै,,
१०७ ॐ महादेवसमायुक्तशरीरायै ,,
१०८ ॐ महादेवरतौत्सुक्यमहादेव्यै ,,

* * *

द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणम्

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

सौराष्ट्रे सोमनाथं च श्रीशैले मल्लिकार्जुनम् ।
उज्जयिन्यां महाकालमोंकारममलेश्वरम् ॥ १ ॥

परल्यां वैद्यनाथं च डाकिन्यां भीमशंकरम् ।
सेतुबंधे तु रामेशं नागेशं दारुकावने ॥ २ ॥

वाराणस्यां तु विश्वेशं त्र्यंबकं गौतमीतटे ।
हिमालयं तु केदारं घुश्मेशं (घुसृणेशं) च शिवालये ॥ ३ ॥

एतानि ज्योतिर्लिङ्गानि सायंप्रातः पठेन्नरः ।
सप्तजन्म कृतं पापं स्मरणेन विनश्यति ॥ ४ ॥

इति श्री द्वादशज्योतिर्लिङ्गस्मरणं संपूर्णम् ।

आरती

"श्री चिदम्बर नटम्"

सुदञ्चित मुदञ्चित निकुञ्चित पदार्पित जलञ्झलित मंजुकटकं,
पतञ्जलि दृगञ्जन मचञ्चल पदंजनन भंजनकरं गलरवम्।
कदम्ब रुचिमम्बर वसंपरममम्बुद कदम्बकविडम्बनकरं,
चिदम्बुधि मणिंबुध हृदम्बुजरविं वरचिदम्बरनटं हृदिभजे ॥१॥
हरंत्रिपुरभञ्जन मनन्तकृतकङ्कण मखण्डदयमन्त रहितं,
विरञ्चिसुरसंहति पुरन्दर विचिन्तित, पदंतरुण चन्द्रमकुटम्।
परंपरमखण्डित यमंभसितमण्डित तनुंमदनभञ्जनकरं,
चिरन्तनमिमं प्रणतसञ्चितनिधिं वरचिदम्बर० ॥२॥
अनन्त नवरत्नविलसत्कनक किङ्किणि झलंझल झलंझल रवं,
मुकुन्दविधि हस्तगति मद्दललयध्वनिधिमिद्धिमित नर्तनपदम्।
शकुन्तरथ बर्हिरथ दन्तिमुख नन्दिमुख भृङ्गिनटसङ्घ निकटं,
सनन्दसनक प्रमुख वन्दितपदं वरचिदम्बर० ॥३॥
अनन्त मखिलं जगदभङ्गगुणतुङ्ग ममतंसितविधुं सुरसरि-
त्तरङ्ग निकुरुम्बधृत लम्बनजटं शमनडम्भहरणं भवहरम्।
शिवंदशदिगन्तर निरन्तर विजृम्भित करंकरल सन्मृगशिशुं,
भवंशशिधनञ्जय पतङ्ग नयनं वरचिदम्बर० ॥४॥
परं पुरहरं सुरवरं पशुपतिं जनित दन्तिमुख षण्मुखविभुं,
मृडंकनक पिङ्गल जटिं सनक पङ्कज रविं शमित संयमिशुचिम्।
शिवं कलभचर्मवसनं जलधि जन्मगार लंकवलयन्तममलं,
दृढंप्रणवकन्दमभयं करपदं वरनचिदम्बर० ॥५॥
अखण्डविधुमण्डलमुखं डमरुमण्डित करं कनक मण्डपगृहं,
स्वगण्डतल कुण्डलित कुण्डलिप मण्डलित मण्डल पिचण्ड मतुलम्।
मृकण्डसुत चण्डतरदण्ड धर लुण्ठन परं हृदय मण्ड परशुं,
शिखण्ड शशि खण्डमणि मण्डन परं वर चिदम्बर० ॥६॥

देव्यपराधक्षमापनस्तोत्रम्

न मन्त्रं नो यन्त्रं तदपि च न जाने स्तुतिमहो,
न चाह्वानं ध्यानं तदपि च न जाने स्तुतिकथाः ।
न जाने मुद्रास्ते तदपि च न जाने विलपनं,
परं जाने मातस्त्वदनुसरणं क्लेशहरम् ॥ १ ॥
विधेरज्ञानेन द्रविणविरहेणालसतया,
विधेयाशक्यत्वात् तव चरणयोर्या च्युतिरभूत् ।
तदेतत्क्षन्तव्यं जननि सकलोद्धारिणि शिवे,
कुपुत्रो जायेत क्वचिदपि कुमाता न भवति ॥ २ ॥
पृथिव्यां पुत्रास्ते जननि बहवः सन्ति सरलाः,
परं तेषां मध्ये विरलतरलोऽहं तव सुतः ।
मदीयोऽयं त्यागः समुचितमिदं नो तव शिवे कुपुत्रो० ।३।
जगन् मातर्मातस्तव चरणसेवा नरचिता,
न वा दत्तं देवी द्रविणमपि भूयस्तव मया ।
तथापि त्वं स्नेहं मयि निरूपमं यत्प्रकुरुषे कुपुत्रो० ॥४॥
परित्यक्त्वा देवान् विविधविधसेवा कुलतया,
मया पञ्चाशीतेरधिकमपनीते तु वयसि ।
इदानीं चेन्मातस्तव यदि कृपा नापि भविता,
निरालम्बो लम्बोदरजननि कं यामि शरणम् ॥५॥
श्वपाको जल्पाको भवति मधुपाकोपमगिरा,
निरातङ्को रङ्को विहरति चिरं कोटिकनकैः ।

तवापर्णे कर्णे विशति मनुवर्णे फलमिदं,
जनः को जानीते जननि जपनीयं जपविधौ ॥ ६ ॥
चिता भस्मालेपो गरलमशनं दिक्पटधरो,
जटाधारी कण्ठे भुजगपतिहारी पशुपतिः ।
कपाली भूतेशो भजति जगदीशैकपदवीं,
भवानि त्वत्पाणिग्रहणपरिपाटीफलमिदम् ॥ ७ ॥
न मोक्षस्याकांक्षा भवविभववाञ्छापि च न मे,
न विज्ञानापेक्षा शशिमुखि सुखेच्छापि न पुनः ।
अतस्त्वां संयाचे जननि जननं यातु मम वै,
मृडानी रुद्राणी शिव-शिव भवानीति जपतः ॥ ८ ॥
नराधितासि विधिना विविधोपचारैः,
किं रुक्षचिन्तनपरैर्न कृतं वचोभिः ।
श्यामे त्वमेव यदि किंचन मय्यनाथे,
धत्से कृपामुचितमम्ब परं तवैव ॥ ९ ॥
आपत्सु मग्नः स्मरणं त्वदीयं, करोमि दुर्गे करुणार्णवेशिवे ।
नैतच्छठत्वं मम भावयेथाः, क्षुधातृषार्ता जननीं स्मरन्ति ॥१०॥
जगदम्ब विचित्रमत्र किं, परिपूर्णा करुणास्ति चेन्मयि !
अपराधपरंपरावृतं, नहि माता समुपेक्षते सुतम् ॥११॥
मत्समः पातकी नास्ति पापघ्नी त्वत्समा नहि ।
एवं ज्ञात्वा महादेवि यथा योग्यं तथा कुरु ॥१२॥
॥ इति श्रीशंकराचार्य विरचितं देव्यपराधक्षमापन स्तोत्रं सम्पूर्णम् ॥